।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 125 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अक्टूबर– 2018 30/–प्रति

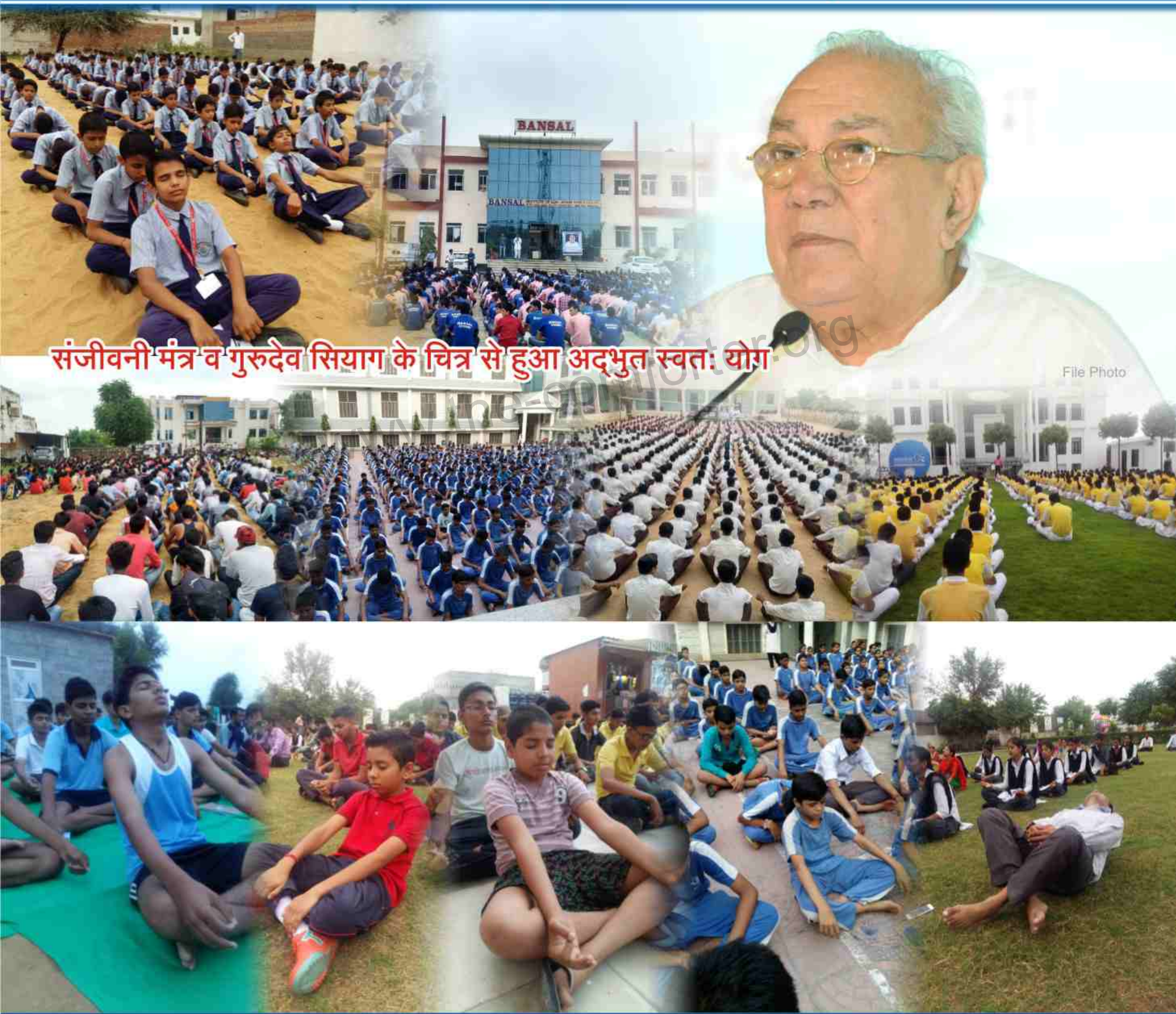

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

बाड़मेर जिले के विभिन्न विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (अगस्त–सितम्बर 2018)

अश्विनी हॉस्पीटल मुम्बई में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (23 सितम्बर 2018)

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 125 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अक्टूबर – 2018

वार्षिक 300/– ❋ द्विवार्षिक : 600/– ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❋ मूल्य 30/–

❖
संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्‌गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)
❖
सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

नाम और नशा....4
गुरु और अवतार (सम्पादकीय)....5
प्रायोजक (Sponsor)....6
सद्‌गुरुदेव का प्रवचन....7
अवतरण दिवस (24 नवम्बर 2018)....8
प्रार्थना....9
Religious Revolution in the World....10
योग के बारे में....11
हृदय मंथन....12
योगियों की आत्मकथा....13
मेरे गुरुदेव....14
योग के आधार....15
जीवन का उद्देश्य....16
और आगे (कहानी)....17–18
चित्र पृष्ठ....19–24
संस्था की गतिविधियाँ....25
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....26–28
अवतार की संभावना और हेतु....29
मनुष्य और विकास....30
विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....31
अहंकार....32
पूर्ण समर्पण....33
सिद्धयोग....34
सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....35–36
शेष पृष्ठ सम्पादकीय....37
ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

'नाम और नशा'

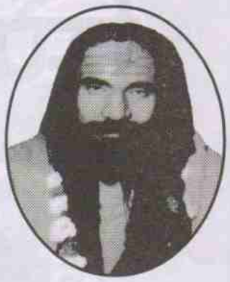

साथ चल ही नहीं सकते !

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

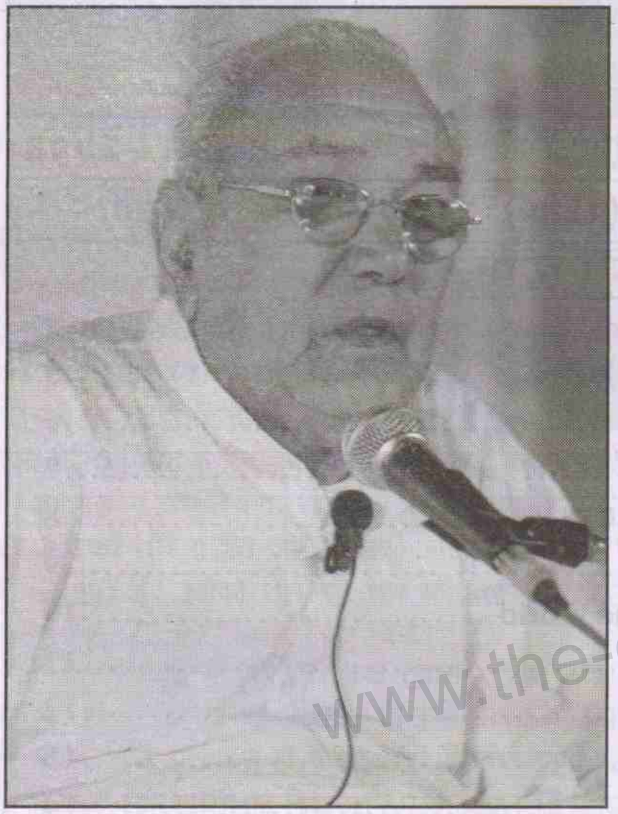

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा बताए गए संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित ध्यान से जो अद्भुत परिवर्तन आता है, इस संबंध में सद्गुरुदेव के दिव्य वाक्यांश-

''इस प्रकार नशा छूट जाता है और नाम का नशा चढ़ जाता है। अब कितने लोग कहते हैं कि अफीम मत खाओ कि हेरोइन मत खाओ कि फलां मत खाओ कि शराब मत पीओ। कोई मानता है क्या ? इधर से सुनते हैं, इधर (दूसरे कान) से निकाल देते हैं।

मैं चैलेंज के साथ कहता हूँ कि ''मत छोड़ो''। एक बोतल पी रहे थे आज से दो शुरू कर दो, डेढ़ शुरू कर दो, मगर ''नाम'' को भी ''मत छोड़ो''। ''नाम'' और ''नशा'' आज तक साथ चला ही नहीं है। 90 (सन् 1990) से यह चैलेंज (चुनौती) कर रहा हूँ।''

संदर्भ-शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम-ए ई एम ग्राऊण्ड, बोड़कदेव, अहमदाबाद
दिनांक 26 मार्च 2009

अध्यात्म विज्ञान का परिणाम

-पदार्थ (Matter)---------नशा.....................'मत छोड़ो'

-अध्यात्म (Spirit)----------नाम.....................'मत छोड़ो'

''नशा मुक्त''
(Matter + Spirit)

फिर कोई समस्या नहीं रहेगी।

नाम जप द्वारा वृत्ति परिवर्तन के संबंध में स्वामी विवेकानंद जी ने, किसी अमेरिकन के पूछने पर बड़ा ही सटीक जवाब दिया था-

You need not to give up the things, the things will give you up;

''अर्थात् वो वस्तुएँ आपको छोड़ने की जरूरत नहीं हैं, वे वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जायेगी।''

वैदिक दर्शन के इसी सिद्धांत के अनुसार सद्गुरुदेव के संजीवनी मंत्र से दुनिया में बड़ा ही अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

संपूर्ण मानव जाति इस चुनौती
''प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?'' को स्वीकार करके
सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर,
इनकी तस्वीर पर ध्यान करके देखें !
सम्पूर्ण मानव जाति का इस आध्यात्मिक सिद्धांत से ही कल्याण होगा-''करके देखें''।

गुरु और अवतार

मनुष्य, भैंसा, मछली-ये सब मानो भिन्न-भिन्न बर्तन हैं; ये सब बर्तन अपनी-अपनी आकृति और जल-धारण-शक्ति के अनुसार ईश्वर-रूपी समुद्र के पास अपने को भरने के लिए जाते हैं। पानी मनुष्य में, मनुष्य का रूप ले लेता हैं, भैंसे में भैंसे का और मछली में मछली का। प्रत्येक बर्तन में वही ईश्वर-रूपी समुद्र का जल हैं, जब मनुष्य ईश्वर को देखता हैं तो वह उसे मनुष्य-रूप में देखता हैं और यदि पशुओं में ईश्वर सम्बन्धी कोई ज्ञान हो तो वे उन्हें अपनी अपनी धारणा के अनुसार पशु के रूप में देखेंगे।

अतः हम ईश्वर को मनुष्य-रूप के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में देख ही नहीं सकते और इसलिए हमे मनुष्य-रूप में ही उसकी उपासना करनी पड़ेगी। इसके सिवाय अन्य कोई रास्ता ही नहीं है। इसीलिए पूज्य सद्गुरुदेव से बढ़कर दुनिया में कोई भगवान् नहीं हैं।

सद्गुरुदेव सियाग के अवतरण दिवस पर समस्त पाठक वृन्द को हार्दिक शुभकामनाएँ। मंगलवार, 24 नवम्बर 2018 को सुबह 10:30 बजे से अवतरण दिवस कार्यक्रम श्रद्धा व समर्पण भाव से जोधपुर आश्रम में मनाया जाएगा। देश-विदेश से आए हुए साधक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र की पूजा-अर्चना व सामूहिक ध्यान कर उनकी असीम कृपा प्रसाद प्राप्त करेंगे। इस पावन सुअवसर पर आप समस्त जिज्ञासु साधक गण सादर आमंत्रित हैं।

अनेक ग्रन्थों, पुराणों व शास्त्रों में गुरु महिमा का उल्लेख है। भगवान् शिव से लेकर अनेक अवतारों व ऋषि-मुनियों ने बढ-चढ़कर गुरु महिमा गाई है। लेकिन सृष्टि काल से आज तक **अवतार, गुरु रूप में कभी प्रकट नहीं हुए।** 24 नवम्बर 1926 को पहली बार पृथ्वी पर सृष्टिनायक ने सद्गुरु रूप में इस धरा को पावन किया।

स्वामी विवेकानन्द ने गुरु और अवतार विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

''जहाँ कहीं प्रभु का गुणगान होता हो, वही स्थान पवित्र है तो फिर जो मनुष्य प्रभु का गुणगान करता है, वह कितना पवित्र होगा ! अतएव जिनसे हमें आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त होती है, उनके समीप हमें कितनी भक्ति के साथ जाना चाहिए? यह सत्य है कि संसार में ऐसे धर्मगुरुओं की संख्या बहुत थोड़ी है, पर संसार ऐसे महापुरुषों से कभी शून्य नहीं हो जाता। वे मानव जीवन के सुन्दरतम पुष्प हैं और '**अहैतुक दयासिन्धु हैं।**' श्री कृष्ण भागवत में कहते हैं, **''मुझे ही आचार्य जानो।''** यह संसार ज्यों ही इन आचार्यों से बिल्कुल रहित हो जाता है, त्यों ही यह एक भयंकर नरककुण्ड बन जाता है और नाश की ओर तीव्र वेग से बढ़ने लगता है।

साधारण गुरुओं से श्रेष्ठ एक और श्रेणी के गुरु होते हैं, और वे हैं-इस संसार में ईश्वर के अवतार। वे केवल स्पर्श से, यहाँ तक कि इच्छा मात्र से ही आध्यात्मिकता प्रदान कर सकते हैं। उनकी इच्छा से पतित से पतित व्यक्ति भी क्षण भर में साधु हो जाता हैं। **वे गुरुओं के भी गुरु हैं**- मनुष्य के माध्यम से ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हैं, उनके माध्यम के अतिरिक्त हम अन्य किसी भी उपाय से भगवान् को नहीं देख सकते। हम उनकी उपासना किये बिना रह नहीं सकते, वास्तव में वे ही एकमात्र ऐसे हैं, जिनकी उपासना करने के लिए हम विवश हैं।

इन मानवीय अभिव्यक्तियों के माध्यम बिना कोई मनुष्य ईश्वर-दर्शन नहीं कर सकता। जब हम अन्य किसी साधन द्वारा **ईश्वर-दर्शन** का यत्न करते हैं तो हम अपने मन में ईश्वर का एक भीषण व्यंग्य-रूप गढ़ लेते हैं और सोचते हैं कि यह व्यंग्य-रूप ईश्वर के प्रकृत स्वरूप से निम्नतर नहीं है। एक बार एक अनाड़ी आदमी से भगवान् शिव की मूर्ति बनाने को कहा गया। कई दिनों के घोर परिश्रम के बाद उसने एक मूर्ति तैयार तो की, पर वह बन्दर की थी ! इसी प्रकार जब हम ईश्वर को तत्त्वतः, उसके निर्गुण, पूर्ण स्वरूप में सोचने का प्रयत्न करते हैं तो हम अनिवार्य रूप से उसमें बुरी तरह असफल होते हैं; क्योंकि जब तक हम मनुष्य हैं, तब तक मनुष्य से उच्चतर रूप में हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते।

एक समय ऐसा आयेगा, जब हम अपनी मानवीय प्रकृति के परे चले जायँगे, और तब हम उसे उसके असली स्वरूप में देख सकेंगे। **पर जब तक हम मनुष्य हैं, तब तक हमें उसकी उपासना मनुष्य में और मनुष्य के रूप में ही करनी होगी।** तुम चाहे

शेष पृष्ठ 37 पर....

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा स्थापित
संस्था

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

के

प्रायोजक, धर्मपिता (Sponsor) उन्नायक

बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी (ब्रह्मलीन)

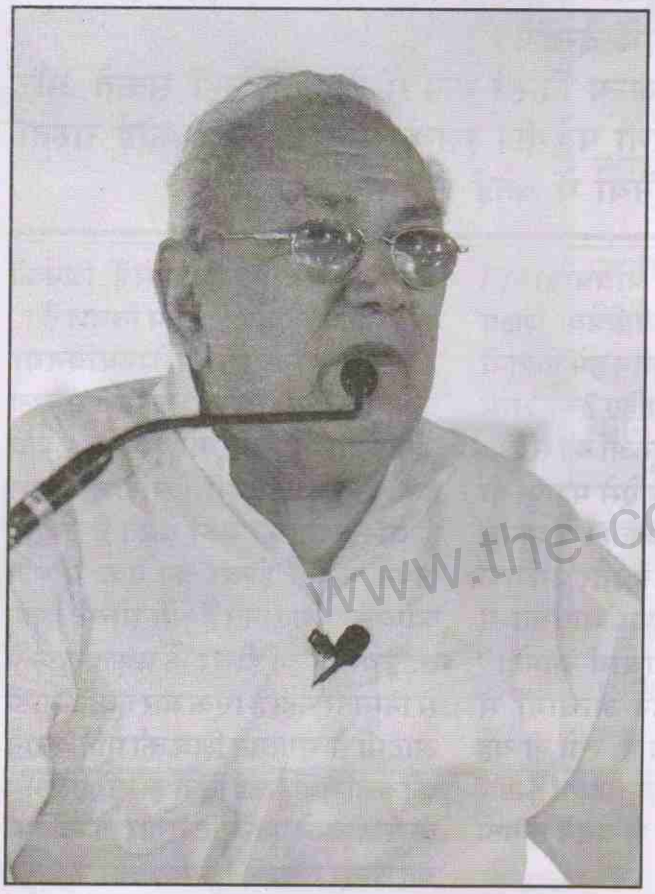

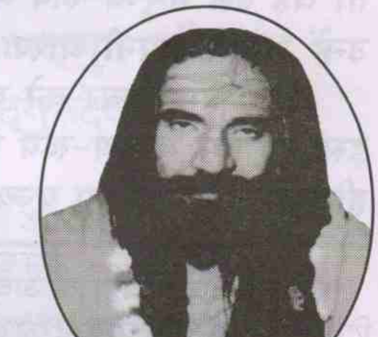

www.the-comforter.org

"गुजरात वाले सबसे ज्यादा परेशान इस बात से हैं कि-आपका स्पोन्सर (Sponsor) करने वाला कोई नहीं है। मैंने कहा-"गंगाईनाथ महाराज"। इनकी कृपा से ही परिवर्तन आ रहा है। गुरु नहीं बनाता तो कुछ भी नहीं होता मेरे में।"

संदर्भ-सद्गुरुदेव सियाग के पावन सान्निध्य में
आयोजित शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम-ए ई एम ग्राऊण्ड
बोड़कदेव, अहमदाबाद
दिनांक 26 मार्च 2009
वीडियो-29:39 से 30:54 तक

"संन्यासी का आश्रम और हाथी का पेट तो भगवान् ही भरता है"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे....

सद्‌गुरुदेव का प्रवचन

गुरु शिष्य परम्परा में दीक्षा का एक विधान होता है। अलग-अलग पंथों में, अलग-अलग मतों में-दीक्षा के अलग-अलग तरीके होते हैं। मैं जो दीक्षा दे रहा हूँ, यह **''नाथमत''** की एक देन है, इसे **शक्तिपात दीक्षा** कहते हैं। शक्तिपात का मतलब, बाहर से कोई चीज आप में उड़ेली जाएगी, ऐसा कुछ नहीं है। मोटे तौर से समझाऊँ कि एक दीपक जल रहा है, आपके दीपक में तेल बाती सब कुछ है, उससे जुड़ जाईये **प्रकाश** हो जाएगा। मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं है, जो आपके पास नहीं है और मैं आपको दे दूँ। **आपके पास सब कुछ हैं-जन्म से,** सब कुछ हैं-मगर आप उन शक्तियों को चेतन करके, जीवन में उपयोग लेने का तरीका नहीं समझ पा रहे हो, बस इतनी सी देर है और इसमें देर भी नहीं लगती। देर तब लगे जब कुछ करना-कराना हो। कुछ भी नहीं करना है-पहले से करा कराया तैयार ही है, बस आपकी जानकारी में नहीं है।

मुझे मालुम है-दीक्षा देने वाले गुरु बड़ा लम्बा चौड़ा Time (समय) दे देते हैं। दस साल लगेंगे, पन्द्रह लगेंगे, बीस लगेंगे। मैं तो कई दफे कह देता हूँ कि गुरु चेला बीस साल रहेंगे, इसकी क्या गारन्टी है ? और बीस साल बाद क्या हो जाएगा, जो आज नहीं है। वह अभी क्युँ नहीं शुरु हो जाता तो एक क्रियात्मक योग है जो आपको तत्काल Result (परिणाम) देगा।

''अब कलियुग में देखिए ! हर युग में हमारे दार्शनिक ग्रन्थों के अनुसार आराधना का तरीका तय होता है। सत्युग का अलग था, त्रेता का अलग था, द्वापर का अलग था। मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए, हमारे धर्म में आराधना तय की गई है। अब कलियुग में, उस तरीके से (आराधना) करना संभव नहीं है। इसलिए, इस युग में केवल **हरि नाम का जप** ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है। ईश्वर के नाम का जप। **गीता में भगवान् कृष्ण ने नाम जप को सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।**

दसवें अध्याय में अपने स्वरूपों का वर्णन किया है। भगवान् ने पच्चीस वें श्लोक में कहा है कि **''यज्ञों में, मैं जप यज्ञ हूँ। नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है।''** महाभारत कहती है कि यह एक ऐसा यज्ञ है जिससे कोई हिंसा नहीं होती है। महाभारत काल में हिंसा बहुत हुई, इसलिए वह लोग हिंसा से बहुत डरते थे।

नाम जप से कोई हिंसा नही होती। कर्म काण्डी यज्ञ करोगे, आग में घी लकड़ी वगैरह जलाओगे तो कमोबेश थोड़े बहुत जीव जलेंगे, मगर नाम जप में कोई हिंसा नहीं होती। मनु ने, मनु स्मृति में कहा है कि **'जप यज्ञ'** द्वारा, कर्म काण्डी यज्ञों से हजार गुणा ज्यादा फायदा होता है। मैं तो आपको एक नाम बताऊँगा, वह आपको जपना है। वैसे मैं, क्योंकि एक कृष्ण उपासक हूँ, इसलिए राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ। **भगवान् कृष्ण पूर्णावतार थे और उस कृष्ण के नाम का ही चमत्कार है कि यह सब परिवर्तन हो रहा है।** मेरा कोई पंथ नहीं, नया मत नहीं, वही वैदिक दर्शन को मूर्त रूप दिया जा रहा है।''

इस दर्शन का आपको परिचय नहीं करवाया गया। दार्शनिक ग्रंथों में तो वह पहले से ही कैद है सारे सूत्र प्रूव्ड है, प्रमाणित है। अब क्योंकि धर्म जो है एक पतन के काल से गुजरता हुआ आ रहा था और आतताई लोगों ने हमारे सांस्कृतिक ग्रंथों को नष्ट कर दिया। मुस्लिम ने कर दिया ईसाइयों ने कर दिया। बहुत डेमेज किया इसलिए ग्रंथ इतने Available (उपलब्ध) भी नहीं है ।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

(24 नवम्बर 1926)

का 93 वाँ

अवतरण दिवस

24 नवम्बर 2018 को सुबह 10.30 बजे जोधपुर आश्रम में मनाया जाएगा।

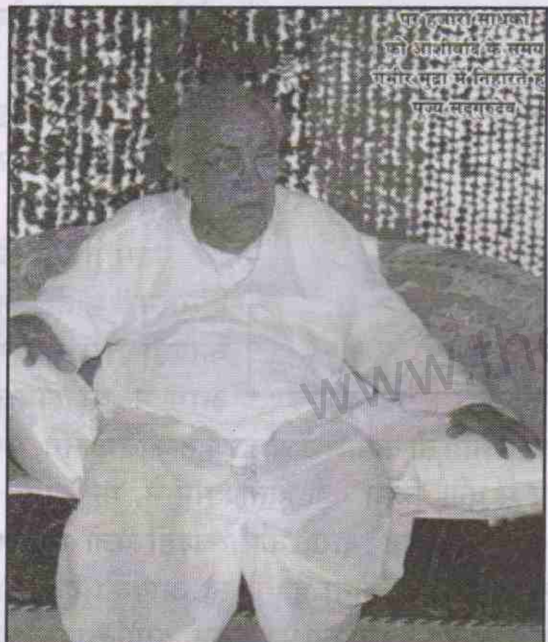

"24 नवम्बर 1926 के दिन भौतिक में श्री कृष्ण का अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक ज्योति नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का मतलब है-अधिमानसिक देव का अवतरण जो अपने-आप तो वास्तव में अतिमानसिक नहीं है पर अतिमन और आनंद के अवतरण के लिये तैयारी कर रहे हैं।

कृष्ण आनंदमय है, वे आनंद की ओर अभिमुख विकास को अधिमानस के द्वारा सहारा देते हैं।"

-महर्षि श्री अरविन्द घोष द्वारा
8 अक्टूबर 1935 को घोषणा
संदर्भ-श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित
'लाल कमल' पुस्तक पृष्ठ-154 पर

इस पावन वेला में समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

प्रार्थना

हे प्रभो ! मैं तेरे आगे सदा "एक कोरे पृष्ठ" की तरह रहना चाहुँगी ताकि मेरे अंदर तेरी इच्छा किसी कठिनाई या किसी भी मिश्रण के बिना लिखी जा सके।

कभी-कभी विचार से पिछली अनुभूतियों की स्मृति तक बुहार फेंकनी जरूरी होती है ताकि वे सतत् नव निर्माण के कार्य में बाधक न हों। केवल यही एक चीज है जो सापेक्षताओं के जगत् में तेरी पूर्ण अभिव्यक्ति को आने की अनुमति देती है।

बहुधा आदमी उस चीज से चिपटा रहता है जो थी, उसे बहुमूल्य अनुभूति के परिणाम को खो देने का, एक विस्तृत और उच्च चेतना के छूट जाने का, निचली अवस्था में जा गिरने का भय रहता है।

लेकिन उसे किस बात का खटका जो तेरा है, क्या वह तेरे अंकित किये हुए, पथ पर, वह चाहे कोई भी पथ क्यों न हो, चाहे उसकी सीमित समझ के लिये एकदम अबोधगम्य क्यों न हो, क्या वह उस पर आनंदमय आत्मा और प्रबुद्धभ्रू के साथ नहीं चल सकता ?

हे प्रभो, विचार के पुराने ढाँचों को तोड़ दे, प्राचीन अनुभूतियों को लुप्त कर दे और अगर तू जरूरी समझे तो सचेतन समन्वय को भी विघटित कर दे ताकि तेरा कार्य अधिकाधिक अच्छी तरह पूरा हो, धरती पर तेरी सेवा पूर्ण हो सके।

-संदर्भ-'प्रार्थना और ध्यान' पुस्तक पृष्ठ-156-157
श्रीमां (श्रीअरविन्द आश्रम)

Religious Revolution in the World

PHILOSOPHY OF SIDDHA YOGA

Brief background

Siddha Yoga is based on the philosophy of Yoga as propounded by ancient sage Matsyendra Nath Ji and codified later by another sage, Patanjali, in a treatise titled 'Yoga Sutra' several thousand years ago. According to Mythology Matsyendra Nath Ji was the first human to learn of Yoga from Lord Shiva, who is the embodiment of the eternal supreme consciousness, in the latter's celestial abode in the Himalayas.

The sage was asked to gift the knowledge of Yoga to mankind for its salvation. The knowledge and wisdom contained in Yoga was handed down from ages to ages in the time honored Guru-Shishya (master-disciple) tradition. Guru is therefore an institution in the Yoga tradition, which is central to the practice of Yoga.

What is Yoga?

Yoga is a union with the Divine. Yoga is considered an integral tool of the vast body of Vedic (Hindu) literature that covers the whole gamut of Indian spirituality. The 'Yoga Sutra', containing just 195 aphorisms, lucidly elucidates the eight stages of the 'Ashtang' (eight-fold) Yoga, which a seeker passes through as he progresses along the spiritual path.

Yoga is immensely beneficial in curing bodily and mental diseases and restoring and harmonizing the psycho-physical balance in a human body. However, using it for this purpose alone is to leave out its sole aim — liberating the seeker from the bondage of Karmas (actions), which tie him down to the perennial cycle of life and death.

Yogic philosophy recognizes the subtle link between the human body and the cosmic Supramental Consciousness, which is responsible for the body's very creation.

A potent force lies dormant at the base of the spinal column in every human body. Because it is coiled around the base of the spinal column in three and a half spirals, the ancient sages called it 'Kundalini', the coiled one (like a snake).

Shaktipat Diksha Awakens the Kundalini

Shaktipat is a sanskrit term which combines two terms- shakti (feminine divine energy) and pat (passing of, or transmission of). It literally means transmission of feminine divine energy from one person to another.

However, this meaning is not correct when the term Shaktipat is used in the Siddha Yoga system. This is because it is an acknowledged fact in the yogic scriptures that feminine divine is present in every human body though it lies dormant. So there is no question of shakti being passed from one person to another.

❖❖❖

Count. .....

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

योग के बारे में

-महर्षि श्री अरविन्द

हमारा काम है इन द्वित्तों के कारणों को भंग करके उन्हें विलीन कर देना। अपने-आप भागवत आनन्द के सागर में डुबकी लगाना जो एक और बहु, सम है, जो सभी चीजों में आनन्द लेता है और किसी से दुःख-दर्द के साथ पीछे नहीं हटता।

संक्षेप में, हमें द्वित्तों के स्थान पर ऐक्य, अहंकार के स्थान पर भागवत चेतना, अज्ञान की जगह भागवत प्रज्ञा, विचार की जगह भागवत ज्ञान, दुर्बलता, संघर्ष और प्रयास की जगह आत्म तुष्ट भागवत शक्ति, पीड़ा और मिथ्या सुख की जगह भागवत आनन्द को लाना होगा। ईसा की भाषा में इसे कहते हैं-**''स्वर्ग के राज्य को धरती पर लाना या आधुनिक भाषा में कहें तो भगवान् को जगत् में चरितार्थ और कार्यान्वित करना।''**

धरती पर मानव जाति जीवन का वह रूप है जिसे इस मानव अभीप्सा और भागवत उपलब्धि के लिये चुना गया है। जीवन के अन्य सभी रूपों को या तो इसकी जरूरत नहीं है या वे इसके लिये तब तक अक्षम हैं जब तक कि वे मानवता में न बदल जायें। मानव जाति का एकमात्र वास्तविक उद्देश्य है भागवत परिपूर्णता। जाति में इसके चरितार्थ होने से पहले उसे व्यक्ति के अंदर चरितार्थ करना होगा।

मानव जाति सजीव शरीर में मानसिक सत्ता है। उसका आधार है। भौतिक तत्त्व, उसका केन्द्र और यंत्र है मन और उसका माध्यम है जीवन या प्राण। औसत या स्वाभाविक मानव जाति की यही अवस्था है।

हर मनुष्य में चार उच्चतर तत्त्व अव्यक्त हैं-महस, विज्ञान में शुद्ध आदर्श-रूपता नहीं, व्याहृति नहीं बल्कि व्याहृतियों का स्रोत है, वह बैंक है जिस पर मन, प्राण और शरीर के क्रिया-कलाप निर्भर होते हैं और उसकी अपार सम्पत्ति को निचले जीवन के छोटे सिक्कों में बदल लेते हैं। विज्ञान, भागवत अवस्था और मानव पशु के बीच की कड़ी होने के नाते वह पलायन द्वार है जिसमें से होकर मनुष्य अति प्राकृतिक या दिव्य मानवता में जा सकता है।

निम्नतर मानव जाति मन से प्राण और शरीर की ओर खिंचती है। औसत मानव जाति सदा मन में निवास करती है जो प्राण और शरीर की ओर दृष्टि लगाये रहता और उनसे सीमित रहता है। उच्चतर मानव जाति या तो आदर्श मानसिकता या शुद्ध भाव, ज्ञान के प्रत्यक्ष सत्य और सत्ता के सहज सत्य की ओर उठती है। श्रेष्ठ मानव जाति दिव्य आनन्द की ओर उठती है और उस स्तर से या तो ऊपर शुद्ध सत् और परब्रह्म की ओर उठती है या अपने निम्नतर अंगों को आनन्द देने के लिये इस मानव जाति को अपने और दूसरों के अंदर दिव्यता तक उठाने के लिये बनी रहती है।

जो मनुष्य पर्दा करके अपनी चेतना के उच्चतर या दिव्य परन्तु वर्तमान में प्रच्छन्न गोलार्द्ध में निवास करता है वही सच्चा अतिमानव और इस जगत् में भगवान् की उत्तरोत्तर आत्माभिव्यक्ति, जड़तत्त्व में से आत्मा का अन्तिम उत्पादन है-जिसे अब क्रम विकास का तत्त्व कहते हैं।

भागवत जीवन, शक्ति, प्रकाश और आनन्द में उठना और उस सांचे में सांसारिक जीवन को ढालना धर्म की परम अभीप्सा और योगका पूर्ण व्यावहारिक लक्ष्य है। लक्ष्य है भगवान् को विश्व में चरितार्थ करना लेकिन यह विश्वके परात्पर भगवान् को चरितार्थ किये बिना नहीं हो सकता।

परब्रह्म, मुक्ति और मानव विचार प्रणालियाँ

परब्रह्म निरपेक्ष हैं और चूंकि वे निरपेक्ष हैं इसलिये उन्हें ज्ञान की भाषा में नहीं रखा जा सकता। तुम अनन्त को एक तरह से जान सकते हो परन्तु निरपेक्ष को नहीं जान सकते।

अस्तित्व या अनस्तित्व की सभी चीजें, निरपेक्ष के प्रतीक हैं जिन्हें आत्मचेतना में बनाया गया है (चिदात्मन्)। हम निरपेक्ष को उसके प्रतीकों द्वारा उस हद तक जान सकते हैं जिस हद तक प्रतीक उसे प्रकट करते या उसकी ओर संकेत करते हैं। परन्तु सभी प्रतीकों के योगफल का ज्ञान भी निरपेक्ष का पूरा ज्ञान नहीं होता। तुम परब्रह्म बन सकते हो, परब्रह्म को जान नहीं सकते। *परब्रह्म* होने का अर्थ है आत्म चेतना द्वारा परब्रह्म में वापस जाना क्योंकि वास्तव में तुम तत् हो। तुमने बस अपने-आपको, आत्मचेतना को प्रतीकों की भाषा में पुरुष और प्रकृति में प्रक्षिप्त किया है जिनके द्वारा तुम विश्व को धारण किये हुए हो। अतः प्रतीकशून्य परब्रह्म बनने के लिये तुम्हें विश्व के बाहर निकलकर समाप्त होना होगा।

संदर्भ-श्री अरविन्द,
'मानव से अतिमानव की ओर'

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

"हृदय मंथन"

1960 के अन्तिम महीनों में, मुझे सायटिका की बीमारी ने आ घेरा। काफी तेज आक्रमण था। उस समय महाराजश्री की कुटिया में ही उनके सामने वाले कमरे में रहता था।

एक सप्ताह के लिए उपचार हेतु इन्दौर तथा फिर अहमदाबाद। 1961 की बीस तारीख को वापस देवास आया तो उस दिन एक सज्जन की ब्रह्मचर्य दीक्षा थी। देखाते ही महाराजश्री बोले, "चलो अच्छा हुआ, यह भी आ गया।"

उन सज्जन के साथ ही महारजश्री ने मुझे भी ब्रह्मचर्य की दीक्षा प्रदान कर दी। दीक्षा के पश्चात्, महावाक्य 'प्रज्ञान ब्रह्म' की व्याख्या समझाते हुए कहा, "यह ऋग्वेद का वाक्य है जिस में कहा गया है कि प्रज्ञान ब्रह्म ही है, किन्तु हम इस का अर्थ अपनी दृष्टि से करते हैं जो कि अपने साधन के सिद्धान्त के अनुकूल है। प्रज्ञान शक्ति का वह स्तर है जो इन्द्रियों में चेतनता प्रदान करता है। यह गतिशीलता चाहे बहिर्मुखी हो अथवा अन्तर्मुखी, वह ब्रह्म की ही शक्ति है, ब्रह्म ही है।

सामान्यतया जीव इसकी दिव्यता को जान-पहचान नहीं पाता तथा इसे इन्द्रियों की शक्ति समझता है। बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी, इसके दो स्तर हैं। बहिर्मुखी अवस्था में यह जगत् का कार्य तथा ज्ञान कराती है। वह ज्ञान होते हुए भी ज्ञान नहीं है अर्थात् प्रज्ञान है। भ्रान्ति भी शक्ति की क्रियाशीलता के बिना नहीं हो पाती। अन्तर्मुखी अवस्था में संस्कारों तथा वासनाओं को शुद्ध करती हुई, आत्माभिमुख अग्रसर होती है। योग की भाषा में इसे चेतना तथा ज्ञान की भाषा में प्रज्ञान कहा जाता है।

"चित्ति-शक्ति, चैतन्य शक्ति, चित् शक्ति तथा चेतना (प्रज्ञान) सब चित्ति शक्ति के ही स्तर हैं, तथा ब्रह्म ही है। सर्वप्रथम साधन में प्रज्ञान को अन्तर्मुख किया जाता हैं तब क्रियाओं के माध्यम से प्रज्ञान का अनुभव होता है। केवल शाब्दिक अर्थ समझ लेने से ही प्रज्ञान की यथार्थ समझ नहीं आ सकती।

यह मात्र बौद्धिक नहीं अपितु अनुभवगम्य विषय है, तभी कालान्तर में सोऽहम् (जो वह है, सो मैं हूँ) की अवस्था उदय होती है। लोग बिना प्रज्ञान का अनुभव हुए, मन की निर्मलता के अभाव में, सोऽहम् का जप करने लगते हैं। जब तक प्रज्ञान समक्ष, प्रत्यक्ष सम्मुख न हो, तब तक कैसे कहा जा सकता है कि जो वह सो मैं हूँ! अनुभव के अभाव में केवल बौद्धिक कसरत वृथा है।

प्रज्ञान की जागृति अनुभव, प्रत्यक्षीकरण, अथवा जड़ शरीर से पृथक्करण साधन का आधार है। जिस प्रकार नींव के बिना भवन खड़ा नहीं हो सकता, उसी प्रकार प्रज्ञान की अनुभूति के बिना साधन भी संभव नहीं है।

आज विद्वानों ने प्रज्ञान को तर्क, विवाद तथा प्रवचन का विषय बना दिया है, किन्तु यह अनुभव का विषय है। '**प्रज्ञान ब्रह्म**' की अनुभूति के पश्चात् की, आगे के महावाक्यों की अनुभूति होती है।"

प्रश्न-"यह किन्तु अभी तक तो आप कुण्डलिनी जागृति को साधन का आधार तथा उसका स्थान मूलाधार बताते आ रहे हैं, जब कि आज उसको प्रज्ञान तथा उसका स्थान इन्द्रियाँ कह रहे हैं।"

उत्तर- "यह तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। प्रत्येक शास्त्र की अपनी शब्दावली, शैली तथा अनुभवों का आधार होता है। कई बार विभिन्न शास्त्र एक दूसरे के विपरीत जाते से दिखाई देते हैं। सूक्ष्मात्मक तथा समन्वयात्मक दृष्टि से देखा जाए तो सभी एक ही बात कहते हैं। अन्तर देश, काल, परिस्थितियाँ, रचयिता के निजी अनुभव तथा विषय के प्रस्तुतिकरण के ढंग में पड़ता है। वेदान्त उच्चतम स्तरीय ज्ञानात्मक सिद्धान्त है जिसमें ज्ञान की दृष्टि से, सभी विषयों की समीक्षा की गई है, इसीलिए चेतना को भी प्रज्ञान कहा गया है।

वेदान्त में निम्नस्तरीय साधन-विस्तार नहीं के समान है। प्राय: ब्रह्म के निरूपण पर ही अधिक बल दिया गया है। इसके विपरीत योग सामान्य जीव को नीचे से ऊपर उठाने का दुष्कर कार्य करता तथा उसके लिए साधन का दिग्दर्शन करता है। योग का विषय उच्च ज्ञानात्मक स्तरों की व्याख्या न होकर, साधन की गुत्थी सुलझाना अधिक है। यही हाल भक्ति ग्रन्थों का भी है।

ये लेख देने का उद्देश्य यह है कि आराधना काल में बहुत उतार-चढाव आते रहते हैं, इसलिए साधक सद्गुरु द्वारा बताए पथ पर चलता रहे। पथ से विचलित न हो।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमश: अगले अंक में...

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

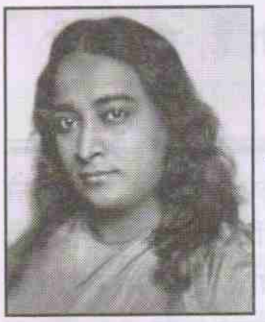

कई वर्षों बाद आत्म साक्षात्कार के बल से, मैं गंधबाबा के चमत्कारों के रहस्य को जान गया। खेद इस बात का है कि वह विधि विश्व के क्षुधार्त मानव-झुण्डों की पहुँच से बाहर है।

मानव को **शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध** की जो विभिन्न इंद्रियानुभूतियाँ होती हैं, वे **इलेक्ट्रोन्स** और **प्रोटोन्स** की स्पन्दनात्मक विविधता के कारण होती हैं। उनके स्पन्दनों को पंचप्राण नियंत्रित करते हैं। ये पंचप्राण आण्विक ऊर्जाओं से भी सूक्ष्मतर होते हैं और प्रज्ञायुक्त पाँच विशिष्ट संवेदी तन्मात्राओं से युक्त होते हैं।

गंधबाबा कुछ यौगिक प्रक्रियाओं के बल से इस प्राण शक्ति के साथ समरस होकर प्राण कणिकाओं की स्पंदन-रचना में परिवर्तन लाने में और इस प्रकार इच्छित परिणाम प्राप्त करने में समर्थ थे। उनके गन्ध, फल और अन्य चमत्कार केवल सम्मोहन द्वारा उत्पन्न आंतरिक संवेदन नहीं होते थे, बल्कि लौकिक स्पंदनों के वास्तव में मूर्त रूप होते थे।

सम्मोहन-विद्या को डॉक्टरों द्वारा छोटी-छोटी शल्यक्रियाओं में उन लोगों पर प्रयुक्त किया गया है जिन के लिये बेहोशी की दवाएँ खतरनाक हो सकती हैं। परन्तु जिन पर बार-बार सम्मोहन का प्रयोग किया जाता है। उनके लिये यह हानिकारक होता है। इसका हानिकारक मनोवैज्ञानिक परिणाम कालान्तर में मस्तिष्क की कोशिकाओं की रचना में गड़बड़ उत्पन्न कर देता है। **सम्मोहन दूसरे की चेतना के क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश है।'** इसके अस्थायी आभासों में और ईश्वरानुभूति-सम्पन्न पुरुषों द्वारा किये गये चमत्कारों में कोई समानता नहीं है। ईश्वर में जाग्रत हुए सच्चे सन्त नित्य सृजन करनेवाले उस विराट स्वप्नद्रष्टा के साथ अपनी इच्छा को मिलाकर इस स्वप्न-सृष्टि में परिवर्तन करते हैं।

''गंधबाबा जैसे चमत्कारों का प्रदर्शन करते थे वैसे चमत्कार दिखाने से लोग आकर्षित तो होते हैं, परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से उनका कोई लाभ नहीं होता। मनोरंजन के अतिरिक्त उनका कोई प्रयोजन नहीं होता, अतः ईश्वर की यथार्थ खोज से ये साधक को पथच्युत कर देते हैं।''

असाधारण शक्तियों के आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन की सिद्धजनों ने निंदा की है। फारस के सन्त अबु सईद ने जल, हवा और अंतरिक्ष पर अपनी चमत्कारी शक्तियों की सत्ता का अभिमान करनेवाले कुछ फकीरों का उपहास किया था।

'' मेंढक भी पानी में आराम से रह सकता है !'' अबु सईद ने सौम्यता से उपहास करते हुए कहा था। ''चील कौए आसानी से हवा में उड़ सकते हैं; शैतान पूर्व में भी है और पश्चिम में भी। **सच्चा मनुष्य वह है, जो समाज में सदाचार का पालन करता हुआ रहता है और क्रय-विक्रय करते हुए भी कभी एक क्षण के लिये भी ईश्वर को नहीं भुलाता !''** एक अन्य अवसर पर इस महान् फारसी संत ने धार्मिक जीवन के विषय में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया था: ''अपने दिमाग में जो कुछ है उसे निकाल देना (स्वार्थनिष्ठ, इच्छा-आकांक्षाएँ); हाथ में जो कुछ है उस का मुक्तरूप से दान करना; आपत्तियों के आघात से कभी भी विचलित नहीं होना !''

न तो कालीघाट के निस्पृह महात्मा और न तिब्बत से प्रशिक्षित योगी ही मेरी गुरु-प्राप्ति की तीव्र इच्छा को संतुष्ट कर सके। किसी का आध्यात्मिक स्तर पहचानने में मेरे हृदय को शिक्षित करने की आवश्यकता नहीं थी। जब भी किसी सचमुच उदात्त व्यक्तित्व का सामना होता तब वह धन्य-धन्य कर उठता, यह धन्य-धन्य और भी गूँजनेवाली होती क्योंकि यह कभी-कभार ही और वह भी अंतरतम गहराइयों से उठती। अंततः जब अपने गुरु से मेरा साक्षात्कार हुआ, तब उन्होंने केवल उदाहरण की अत्युच्चता के द्वारा ही मुझे ''सच्चे पुरुष'' का परिमाण सिखाया।

''आराधनाशील साधक किसी भी प्रकार के चमत्कारों के प्रलोभन में न पड़े तथा न हीं अपने आपको पुजवाने का प्रयास करें। सद्गुरु का ज्ञान ही सर्वोत्तम है।''

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

!!मेरे गुरुदेव!!

-स्वामी विवेकानन्द

"मैं कुछ नहीं तू ही सब कुछ है" और जो कहता है-**मैं नहीं**, बस उसी के हृदय को ईश्वर परिपूर्ण कर देते हैं। **"यह शुद्र अहंभाव जितना ही कम होता है, उतनी ही उसमें ईश्वर की अभिव्यक्ति होती है।"**

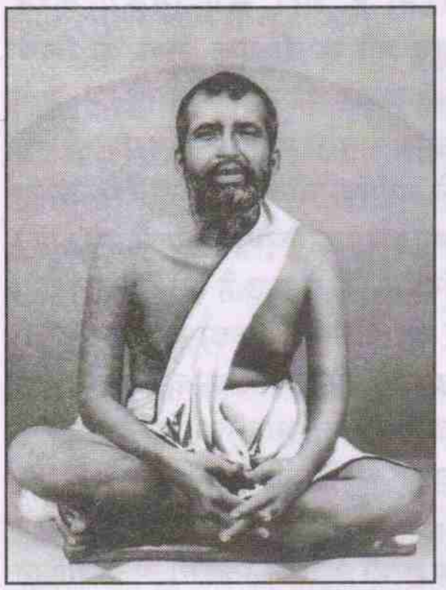

यही अनुभव उन्हें ईसा मसीह के सच्चे धर्म के अनुसरण से भी हुआ। इसी प्रकार उन्हें जो भी अन्य धर्म पथ मिले उन सभी को उन्होंने ग्रहण किया और उन सभी की साधनाएँ पूर्ण अंतःकरण से की। जैसा जैसा उनसे कहा गया था, ठीक वैसा ही उन्होंने किया और प्रत्येक दशा में एक ही परिणाम पर पहुँचे।

इस प्रकार एवं अनुभव द्वारा उन्हें यह ज्ञात हुआ कि प्रत्येक धर्म का एक ही मार्ग है और सब धर्म एक ही सत्य की शिक्षा देते हैं। अंतर केवल पद्धति तथा विशेष रूप से भाषा में रहता है वस्तुतः संबंधों तथा धर्मों का देश मूलतः एक ही है। लोग केवल अपने स्वार्थ साधन के लिए लड़ते रहते हैं।

वह सत्य के इच्छुक नहीं होते, पर इच्छुक होते हैं केवल अपने अपने संप्रदाय के नाम के लिए। सभी धर्म एक ही सत्य की शिक्षा देते हैं परंतु उनमें से यह कहता है कि दूसरा सत्य नहीं हो सकता क्योंकि उस धर्म का नाम मेरे धर्म के नाम से भिन्न है।

अतः दूसरे धर्म के प्रचार की बातों पर ध्यान मत दो और यद्यपि वह बहुत कुछ वही सिखाता है, जो मैं कहता हूँ परंतु फिर भी वह सत्य नहीं कहता क्योंकि जो वह सिखाता है, वह मेरे धर्म के नाम से संबंधित नहीं, यह रहस्य मेरे गुरुदेव ने जान लिया और फिर वह परम अहशून्यता की साधना में संलग्न हो गए क्योंकि वह यह जान गए थे कि सभी धर्मों का मुख्य भाव है कि **"मैं कुछ नहीं तू ही सब कुछ है"** और जो कहता है-मैं नहीं, बस उसी के हृदय को ईश्वर परिपूर्ण कर देते हैं।

"यह शुद्र अहंभाव जितना ही कम होता है, उतनी ही उसमें ईश्वर की अभिव्यक्ति होती है।" संसार के प्रत्येक धर्म में उन्हें यही सत्य मिला और उसने उसी को संपादित करने में व्यतीत हो गए जैसा कि मैं तुमसे कह चुका हूँ। जब जब कोई साधना करने का विचार उनके मन में आया, तभी उसके संबंध में सूक्ष्म सैद्धांतिक विवेचनाओं में ना पड़कर तत्काल उसके अभ्यास में लग जाते थे। हम बहुत से लोगों को इन सब विषयों पर बड़ी-बड़ी बातें करते हुए देखते हैं परंतु यह सब बातें केवल सैद्धांतिक ही होती हैं। मैं परम् भाग्यशाली था कि मुझे सिद्धांतों को कार्य रूप में परिणित करने वाले गुरुदेव मिल गये। जिस वस्तु को वह सत्य रूप समझते थे, उसको कार्य रूप में परिणित कर डालने की उनमें अद्भुत शक्ति थी। उसी स्थान के समीप एक चांडाल जाति का परिवार रहता था। भारत में इस जाति की संख्या कई लाख हैं और वह इतने नीच समझे जाते हैं कि हमारे कतिपय ग्रंथों के अनुसार यदि ब्राह्मण अपने घर के बाहर प्रातः काल निकलते ही किसी चांडाल का मुख देख ले तो उसे दिन भर व्रत रखना पड़ता है और फिर शुद्ध होने के लिए कुछ मंत्रों का उच्चारण करना पड़ता है।

कुछ हिंदू नगर ऐसे हैं कि जब उनमें कोई चांडाल घुसता है तो उसे अपने सिर पर, कौए का एक पंख रख लेना होता है जिससे सब उसे पहचान सके कि वह चांडाल है। साथ ही उसे जोर से चिल्लाना पड़ता है हटो, बचो, सड़क पर एक शानदार (चांडाल) जा रहा है और लोग उसे ऐसे दूर भागते हैं मानो जादू से भाग रहे हो क्योंकि यदि वे उसे धोखे से भी छू ले तो उन्हें जा कर अपने कपड़े बदलने पड़ते हैं, स्नान करना पड़ता है तथा अन्य कई बातें करनी पड़ती हैं। शानदार (चांडाल) भी हजारों वर्षों से यह विश्वास करता चला आया है कि यह सब ठीक ही है क्योंकि यदि वह किसी को छू लेगा तो वह मनुष्य अपवित्र हो जाएगा।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

"योग के आधार"

-श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा, आत्मसमर्पण

इतने थोड़े समय में पूर्ण समर्पण करना संभव नहीं, क्योंकि पूर्ण समर्पण का अर्थ है अपनी सत्ता के प्रत्येक भाग में से अहं की ग्रंथि को काट डालना और उसे मुक्त कर पूर्णरूपेण भगवान् को समर्पित कर देना। मन, प्राण और भौतिक चेतना को (यहाँ तक कि इनके प्रत्येक भाग को और प्रत्येक भाग के समस्त क्रिया कलाप को) एक के बाद एक, अलग-अलग, अपने-आपको समर्पित करना होगा, उन्हें अपने तरीके को छोड़ना होगा तथा भगवान् के तरीके को स्वीकार करना होगा।

परंतु साधक जो कुछ कर सकता है, वह यह है कि वह आरंभ से ही अपनी केंद्रीय चेतना में एक संकल्प और आत्मनिवेदन का भाव उत्पन्न करे और आत्मदान को पूर्ण बनाने का जो कोई अवसर उपस्थित हो उससे लाभ उठाते हुए, पग-पग पर जो कोई मार्ग सामने खुला मिले उसके द्वारा उस मूल भाव को परिपूर्ण बनाये। जब एक दिशा में समर्पण हो जाता है तब वह अन्य दिशाओं के समर्पण को अधिक आसान और अधिक अनिवार्य बना देता है; परंतु वह स्वयं अन्य ग्रंथियों को न तो काटता ही है न ढीला ही करता है, और विशेषकर जो ग्रंथियाँ हमारे वर्तमान व्यक्तित्व और उसकी अत्यंत प्रिय रचनाओं के साथ घनिष्ठ रूप से संबंद्ध होती हैं, वे **केंद्रीय संकल्प** के स्थापित हो जाने तथा संकल्प के कार्य में परिणत हो जाने की पहली मुहर-छाप लग जाने पर भी, बहुत बार बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित कर सकती हैं।

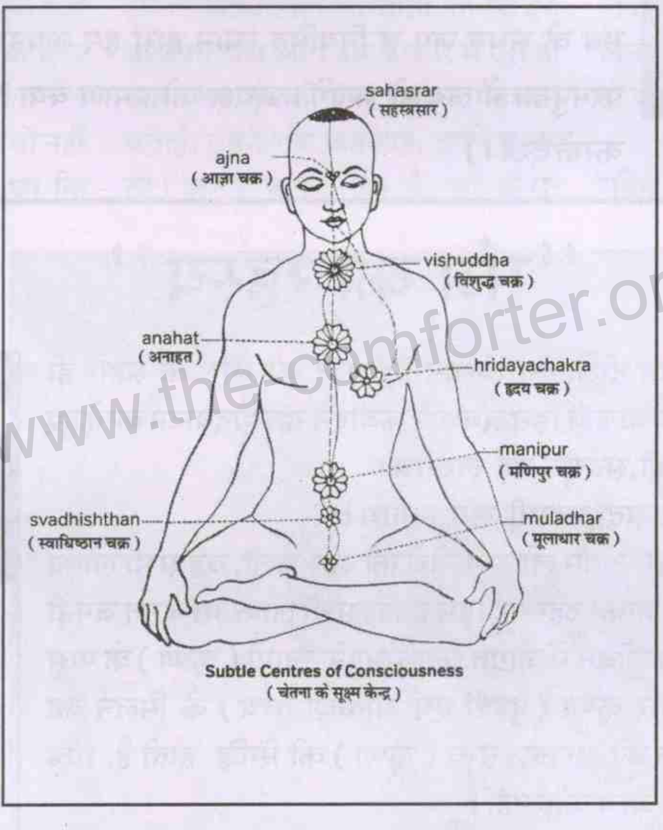

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

तुमने पूछा है कि उस भूल को तुम कैसे सुधार सकते हो जिसे तुम समझते हो कि तुमने किया है। यदि मान भी लिया जाये कि तुम जो कुछ कहते हो वह ठीक वैसा ही है तो भी मुझे यही मालूम होता है कि उसका प्रतिकार बस इसी में है कि **"तुम अपने-आपको भागवत सत्य और भागवत प्रेम का एक पात्र बना लो।"** और ऐसा करने के लिये सबसे पहला उपाय है-पूर्ण **आत्मोत्सर्ग** और आत्म-शुद्धि, भगवान् के प्रति अपने-आपको पूर्ण रूप से खोले रखना, अपने अंदर जो भी चीजें सिद्धि के मार्ग में बाधा पहुँचाने वाली हों, उन सबका त्याग करना। आध्यात्मिक जीवन में किसी भूल के लिये कोई दूसरा प्रतिकार नहीं है, कोई ऐसा प्रतिकार नहीं है जो पूरा-पूरा फलोत्पादक हो। आरंभ में साधक को इस **आंतरिक उन्नति** और परिवर्तन के अतिरिक्त अन्य किसी फल या परिणाम की माँग नहीं करनी चाहिये-क्योंकि ऐसा करने से उसे भयंकर निराशाओं का शिकार होना पड़ता है। जब कोई स्वयं मुक्त हो जाता है तभी वह दूसरों को मुक्त कर सकता है; और योग में तो **"आंतर विजय"** में से ही **"बाह्य विजय"** प्रस्फुटित हो उठती है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

"जीवन का उद्देश्य"

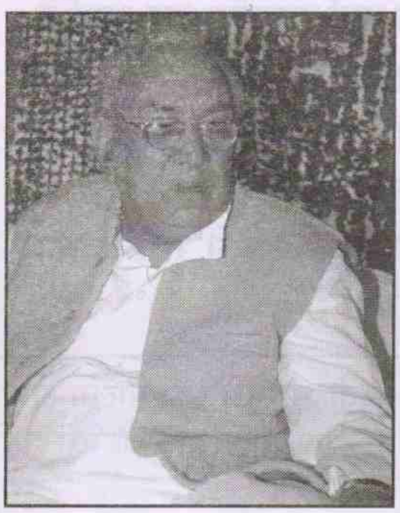

"जीवन का एक उद्देश्य है, यह उद्देश्य है-भगवान् को पाना। भगवान् दूर नहीं हैं, वे हमारे अंदर हैं, अंदर गहराई में, और भावना तथा विचारों से ऊपर। भगवान् के साथ शांति और निश्चिति है और सभी कठिनाईयों का समाधान है।

अपनी समास्याएँ भगवान् को सौंप दो। वे तुम्हें कठिनाईयों से बाहर निकाल लेंगे।"

-श्रीमां (श्री अरविन्द आश्रम)

संदर्भ-श्वेत कमल पृष्ठ-196-197

(सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित आराधना में संजीवनी मंत्र के सघन जप व नियमित ध्यान द्वारा हम अपना सर्वांगीण विकास करते हुए परमपुरुष में लय हो जाएंगे। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? सद्गुरुदेव सियाग का ध्यान करके देखें।)

"मंत्र का रहस्य"

'गुरु-शिष्य' परम्परा में मंत्र दीक्षा का विधान है। शब्द की धारा के सहारे ही सहस्रार में पहुँचना संभव है, अन्यथा नहीं। इस संबंध में कबीर ने रहस्योद्‌घाटन करते हुए कहा है-**कबीरा धारा अगम की,सद्गुरु दई लखाय।**

उलट ताहि पढ़िये सदा,स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली, वह सभी लोकों की रचना करती हुई, मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक उस जगत् जननी राधा (कुंडलिनी) ने रचे। मनुष्य जीवन में जाग्रत करके अपने स्वामी (कृष्ण) के पास पहुँचाई जा सकती है। **राधा और कृष्ण (पृथ्वी एवं आकाश तत्त्व) के मिलन का नाम ही मोक्ष है।** परन्तु जिस गुरु को आकाश तत्त्व (कृष्ण) की सिद्धि होती है, मात्र वही इस काम को कर सकता है, अन्य कोई नहीं।

गुरु महिमा का हमारे शास्त्रों में बहुत बखान हैं, उसी को ध्यान में रखकर असंख्य गुरु प्रकट हो गये। ऐसा सुन्दर व्यवसाय संसार में कोई है ही नहीं। बिना पूँजी लगाए, आमदनी होती है। ऐसे ही गुरुओं के कारण गुरुपद जैसा गौरवमय पद बदनाम हो गया। **गुरु की सर्वोत्तम व्याख्या है--जो 'गोविन्द से मिलाय'** इसीलिए ईश्वर की स्थिति और प्राप्ति के संबंध में कहा गया है- **'जो सभी मानव शरीरों में व्याप्त, हृदय में प्रतिक्षण पूर्णरूप से निवास करते रहने पर भी, जो श्रीगुरुकृपाहीन को गोचर न होकर गुप्तवास कर रहा है, वही वेदान्त का अन्तिम लक्ष्य सच्चिदानंद है।'** मंत्र का रहस्य जब तक समझ में नहीं आता, तब तक साधक उससे कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। मंत्र का रहस्य कैसे जाना जा सकता है, इस संबंध में मालिनीविजयतंत्र में कहा गया है-

मंत्र का रहस्य तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु; शिष्य के सद्गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। हे देवी ! जब गुरु हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और मंत्र मुक्ति देता है, **'गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।'**

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

कहानी...

! ! और आगे ! !

एक बहुत पुरानी कहानी है। एक संत फकीर एक वृक्ष के नीचे ध्यान और तपस्या किया करते थे। रोज एक लकड़हारे को लकड़ी काटते ले जाते देखते थे। एक दिन उससे कहा कि सुन भाई, दिन-भर लकड़ी काटता है, दो जून (वक्त, सुबह-शाम) रोटी भी नहीं जुट पाती। तू जरा आगे क्यों नहीं जाता ? वहाँ आगे **चंदन** का जंगल है। एक दिन काट लेगा, सात दिन के खाने के लिए काफी हो जाएगा।

गरीब लकड़हारे को भरोसा तो नहीं हुआ, क्योंकि वह तो सोचता था कि जंगल को जितना वह जानता है और कौन जानता है ! जंगल में ही तो जिंदगी बीती है। लकड़ियाँ काटते-काटते ही तो जिंदगी बीती है। यह फकीर यहाँ बैठा रहता है वृक्ष के नीचे, इसको क्या खाक पता होगा ? मानने का मन तो न हुआ, लेकिन फिर सोचा कि क्या हर्ज है, कौन जाने ठीक ही कहता हो ! फिर झूठ कहेगा भी क्यों ? शांत आदमी मालूम पड़ता है, मस्त आदमी मालूम पड़ता है। कभी बोला भी नहीं इससे पहले। एक बार प्रयोग करके देख लेना जरूरी है।

एक दिन ऐसा विचार करके जंगल में, जहाँ हमेंशा लकड़ी काटने जाता था उससे और आगे गया तो उसे **चंदन के वृक्ष मिल गये** और वह भी उत्तम गुणवता वाले। लौटा फकीर के चरणों में सिर रखा और कहा कि मुझे क्षमा करना, मेरे मन में बड़ा संदेह हुआ था, क्योंकि मैं तो सोचता था कि मुझसे ज्यादा लकड़ियों के बारे में कौन जानता है ? मगर मुझे चंदन की पहचान ही न थी। मेरा बाप भी लकड़हारा था, मेरा दादा भी लकड़हारा था। हम यही काटने की, जलाऊ-लकड़ियाँ काटते-काटते जिंदगी बिताते रहे, हमें चंदन का पता भी क्या, **चंदन की पहचान क्या !** हमें तो चंदन मिल भी जाता तो भी हम काटकर बेच आते उसे बाजार में ऐसे ही आम लकड़ी की तरह। तुमने पहचान बताई, तुमने गंध जतलाई, तुमने परख दी। जरूर जंगल है। मैं भी कैसा अभागा ! काश, पहले पता चल जाता ! फकीर ने कहा कोई फिक्र न करो, जब पता चला तभी जल्दी है। और कहावत भी **''जागो तभी सवेरा।''** जब घर आ गए तभी सबेरा है। दिन बड़े मजे में कटने लगे। एक दिन काट लेता, सात-आठ दिन, दस दिन जंगल आने की जरूरत ही न रहती। एक दिन फकीर ने कहा मेरे भाई, मैं सोचता था कि तुम्हें कुछ अक्ल आएगी। जिंदगी-भर तुम लकड़ियाँ काटते रहे, आगे न गए, तुम्हें कभी यह सवाल नहीं उठा कि इस चंदन के आगे भी कुछ हो सकता है ? उसने कहा यह तो मुझे सवाल ही न आया। क्या चंदन के आगे भी कुछ है ? उस फकीर ने कहा, चंदन के जरा आगे जाओ तो वहाँ **चाँदी** की खदान है। लकडियाँ-वकडियाँ काटना छोड़ो। एक दिन ले आओगे, दो-चार महीने के लिए हो जाएगा।

अब तो भरोसा आया था। भागा। संदेह भी न हुआ। चाँदी पर हाथ लग गए तो कहना ही क्या ! चाँदी ही चाँदी थी ! चार-छह महीने नदारद हो जाता। एक दिन आ जाता, फिर नदारद हो जाता। लेकिन आदमी का मन ऐसा मूढ़ है कि फिर भी उसे ख्याल न आया कि और आगे कुछ हो सकता है। फकीर ने एक दिन कहा कि तुम कभी जागोगे कि नहीं, कि मुझ ही को तुम्हें जगाना पड़ेगा। आगे सोने की खदान है मूर्ख ! तुझे खुद

अपनी तरफ से सवाल, जिज्ञासा, मुमुक्षा कुछ नहीं उठती कि जरा और आगे देख लूं? अब छह महीने मस्त पड़ा रहता है, घर में कुछ काम भी नहीं है, फुरसत है। जरा जंगल में आगे जाकर देखूं, यह ख्याल में नहीं आता?

उसने कहा कि **"मैं भी मंदभागी, मुझे यह खयाल ही न आया, मैं तो समझा चाँदी, बस आखिरी बात हो गई, अब और क्या होगा?"** गरीब ने सोना तो कभी देखा न था, सुना था।

फकीर ने कहा **"रुक थोड़ा और आगे सोने की खदान है।"** और ऐसे कहानी चलती है। फिर और आगे हीरों की खदान है। और ऐसे कहानी चलती है। और एक दिन फकीर ने कहा कि **"नासमझ, अब तू हीरों पर ही रुक गया?"** अब तो उस लकड़हारे को भी बडी अकड़ आ गई, बड़ा धनी भी हो गया था, महल खड़े कर लिए थे। उसने कहा अब छोड़ो, अब तुम मुझे परेशान न करो। अब हीरों के आगे क्या हो सकता है?

उस फकीर ने कहा. हीरों के आगे **"मैं हूँ।" तुझे यह कभी ख्याल नहीं आया कि यह आदमी मस्त यहाँ बैठा है, जिसे पता है हीरों की खदान का, वह हीरे नहीं भर रहा है, इसको जरूर कुछ और आगे मिल गया होगा!** हीरों से भी आगे इसके पास कुछ होगा, तुझे कभी यह सवाल नहीं उठा?

रोने लगा वह आदमी। सिर पटक दिया चरणों पर। कहा कि मैं कैसा मूढ़ हूँ, मुझे यह सवाल ही नहीं आता। तुम जब बताते हो, तब मुझे याद आता है। यह तो मेरे जन्मों-जन्मों में नहीं आ सकता था-ख्याल कि **"तुम्हारे पास हीरों से भी बड़ा कोई धन है।"** फकीर ने कहा रुक, उसी धन का नाम **"ध्यान"** है। अब खूब तेरे पास धन है, अब धन की कोई जरूरत नहीं। **अब जरा अपने भीतर की खदान खोद, जो सबसे आगे है।**

यही मैं तुमसे कहता हूँ, और आगे, और आगे। चलते ही जाना है। उस समय तक मत रुकना जब तक कि सारे अनुभव शांत न हो जाएँ। परमात्मा का अनुभव भी जब तक होता रहे, समझना दुई मौजूद है, द्वैत मौजूद है, देखनेवाला और दृश्य मौजूद है। जब वह अनुभव भी चला जाता है तब **निर्विकल्प समाधि**। तब सिर्फ दृश्य नहीं बचा, न द्रष्टा बचा, कोई भी नहीं बचा। एक सन्नाटा है, एक शून्य है। **और उस शून्य में जलता है बोध का दीपक।** बस बोधमात्र, चिन्मात्र! वही परम है। वही परम-दशा है, वही समाधि है।

आज दुनिया की यही हालत है, उस लकड़हारे के बाप-दादों और पीछे, और पीछे के पुरखों तक ने लकड़ी काटकर ही बड़ी मुश्किल से पेट पाला लेकिन उस जंगल में चंदन का वृक्ष भी है, यह पता तक नहीं था जो बहुत कीमती और सुगंधित होता है। वैसी स्थिति आज के समाज की है। कोई आपको जगाने आये तो हम यही कहते है कि हमारे बाप-दादे जो पूजा-पाठ करते थे हम तो वो ही करेंगे। मतलब कोई भी अपने आपको बदलने के लिए तैयार नहीं है। न जाने कितनी पीढ़ियों बाद उस लकड़हारे पर सद्गुरुदेव की कृपा दृष्टि बरसी और उसको चंदन नहीं, ऐसा धन बता दिया कि वो जन्म जन्मान्तर तक धनी हो गया। अर्थात् जन्म-मरण के चक्र से रहित हो गया, **भवसागर के पार चला गया।**

जिनको सद्गुरुदेव की कृपा दृष्टि मिली है उन्हें इस अमूल्य धन को संजोकर रखना चाहिए। वो साधक बार बार धन्य है जिनको इस घोर कलियुग में सद्गुरुदेव की शरण मिली हो। उनको समस्त विकारों और आलोचनाओं से अपना ध्यान हटाकर, आराधना में लगाना चाहिए। सद्गुरुदेव सियाग के मुखारविन्द से ध्वनित संजीवनी मंत्र का सघन **'जाप'** और **'ध्यान'** ही **"और आगे"** की अंतिम कड़ी तक पहुँचाने वाला साधन है। ध्यान की गहराई के बारे में किसी महात्मा का कथन है-

जिन खोजा तिन पाइया,
गहरे पानी पैठ।
मैं भोरी डूबन डरी,
रही किनारे बैठ।।

जो आराधना की गहराई में उतरता गया वो परम शिखर तक पहुँच गया और जो किनारे बैठा रह गया, वो रहँ हीं गैंया। **यही जीवन की सार्थकता है।**

कुण्डलिनी-जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा,सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, जोगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं, वही चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में नागिन (सर्पिणी) के रूप में साढे तीन फेरे (कुण्डली) लगाकर सुषुप्त अवस्था में रहती है। जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहता है। समर्थ सद्गुरु की करूणा से ही वह आदि शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत् होती है और मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है।

राजस्थान के सीकर जिले के विभिन्न विद्यालयों व कॉलेजों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। हजरों विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। गुरुदेव की तस्वीर से हुआ अद्‌भुत योग। (3 से 11 सितम्बर 2018)

भिवानी, महेन्द्रगढ़, नारनौल, पीयूष कॉलेज-चौमू, रोहतक, भोपालगढ़, अलवर, वृद्धाश्रम-रायपुर (छत्तीसगढ़) आदि में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (6 से 21 सितम्बर 2018)

भिवानी, महेन्द्रगढ़, नारनौल, पीयूष कॉलेज-चौमू, रोहतक, भोपालगढ़, अलवर, वृद्धाश्रम-रायपुर (छत्तीसगढ़) आदि में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (6 से 21 सितम्बर 2018)

जालोर जिले की सांचौर तहसील व गुजरात के बनासकांठा, थराद व धानेरा के विभिन्न विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयेजित। (5 से 23 सितम्बर 2018)

कुण्डलिनी जनित सिद्धयोग

घण्टाघर जोधपुर में विदेशी सैलानी संजीवनी मंत्र के साथ ध्यान करते हुए (23 सितम्बर 2018)

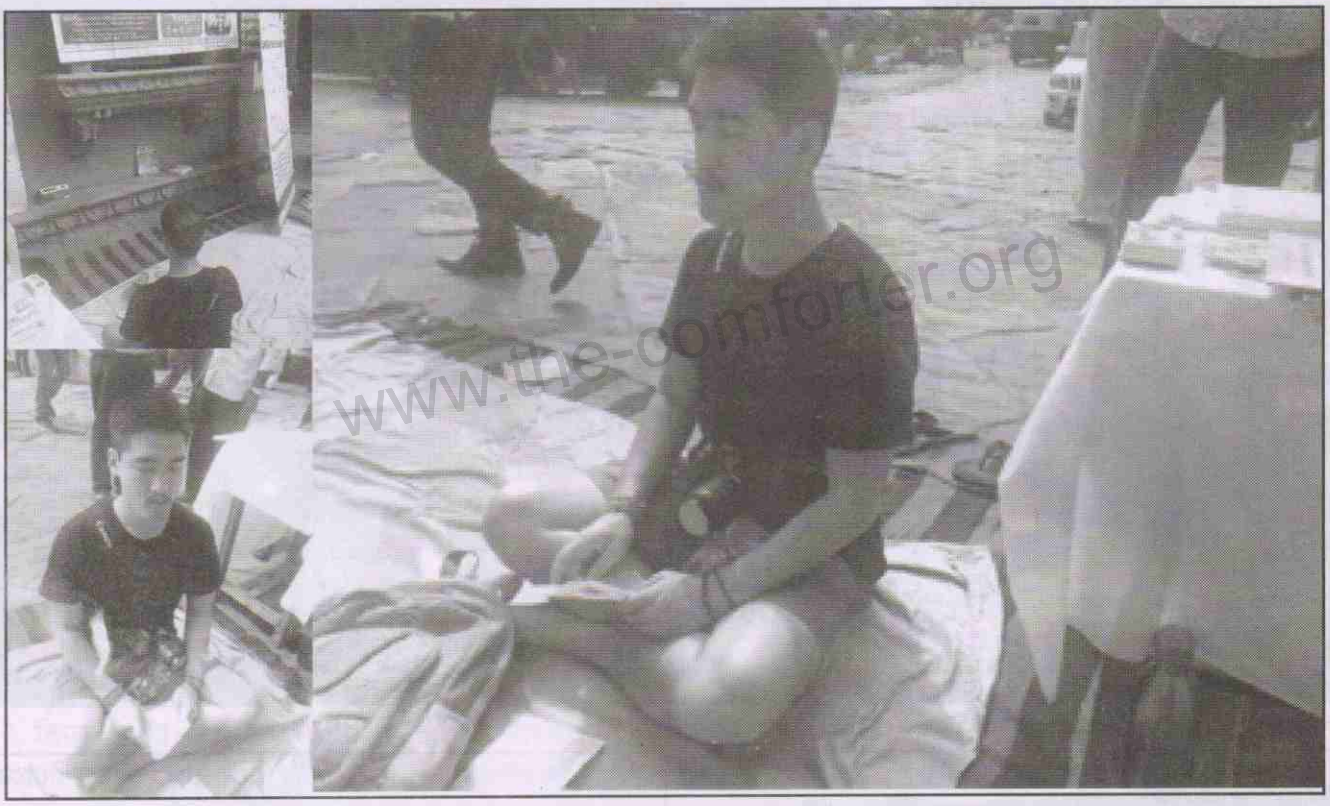

पण्डित रवि शंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़) में सिद्धयोग शिविर आयोजित–22 सितम्बर 2018

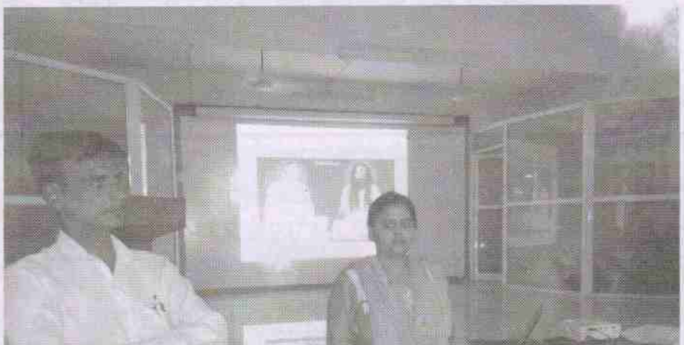

तहसील-नांगल चौधरी जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित 20 सितम्बर 2018

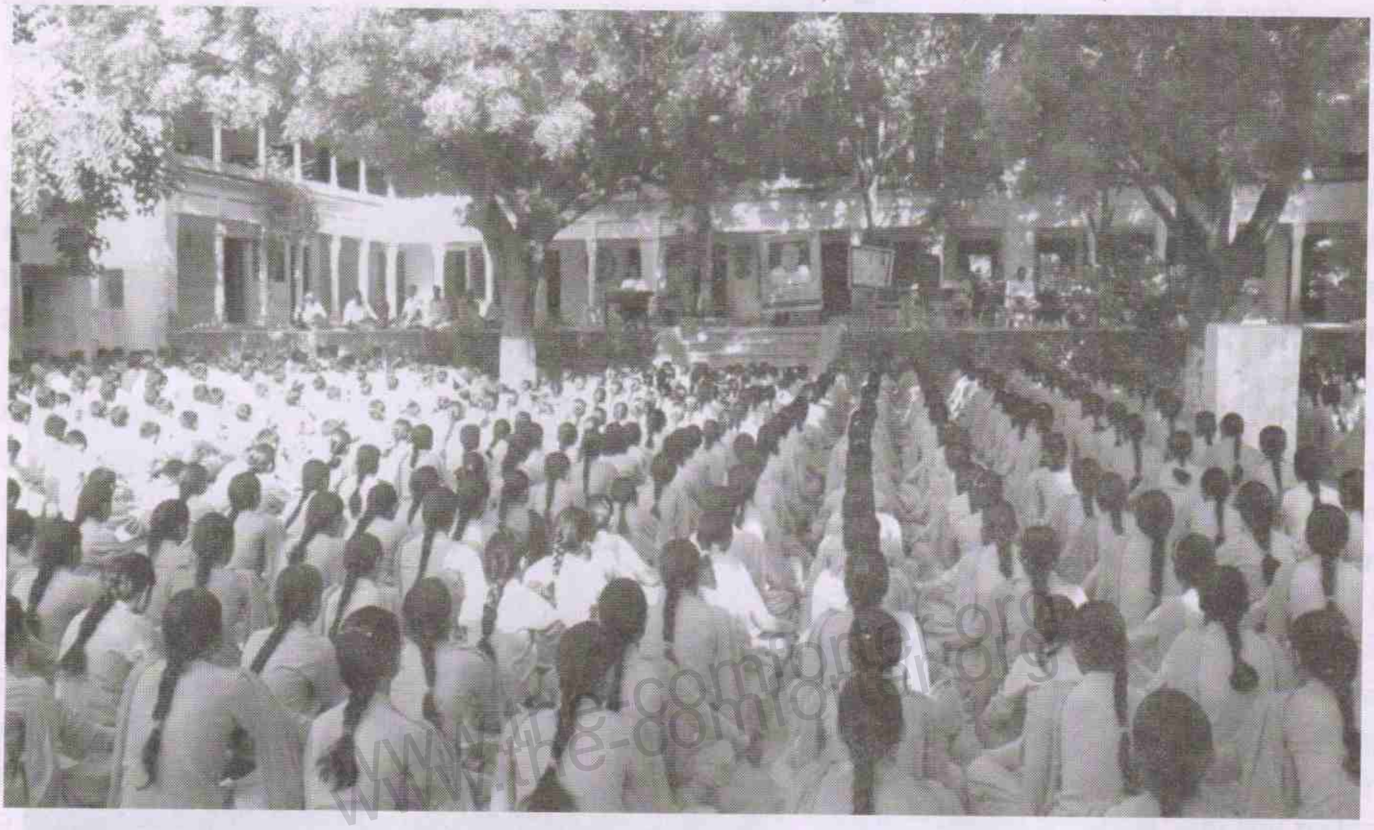

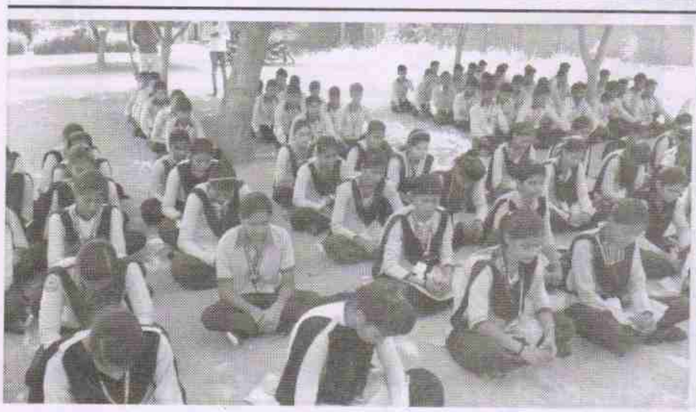

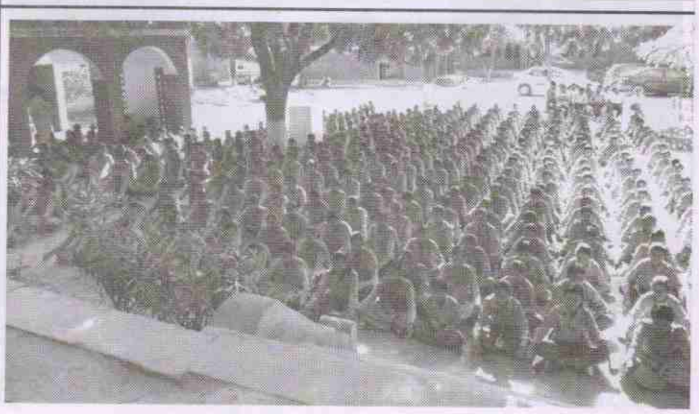

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की गतिविधियाँ

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर मुख्यालय की ओर से सद्गुरुदेव द्वारा स्थापित मिशन-सिद्धयोग दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए अगस्त-सितम्बर 2018 में विभिन्न क्षेत्रों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर हजारों विद्यार्थियों, शिक्षकों व आमजन को इस दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया।

जोधपुरः- मुख्यालय से एक टीम द्वारा दिनांक 6 से 7 सितम्बर तक भोपालगढ़ क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया।

उसके बाद दिनांक 8 से 20 सितम्बर तक विभिन्न स्थलों पर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। 8 सितम्बर को नागौर के आसोप व गोटन के 6 विद्यालयों में, 10 को जयपुर जिले की चौमू तहसील के बंसल संस्थान व पीयूष कॉलेज में, शाम को बहरोड़ (अलवर) में सैनिक ट्रेनिक सेन्टर में सिद्धयोग शिविर आयोजित हुआ।

दिनांक 11-12 सितम्बर को हरियाणा के महेन्द्रगढ जिले की नांगल चौधरी तहसील में 12 विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित किये गए।

दिनांक 13-17 तक हरियाणा के भिवानी जिले में 4 बड़े कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

17 सितम्बर को रोहतक जिले में आईपंथी नाथ अखाड़ा अस्तलभोर में गये जिनके बारे में सद्गुरुदेव ने कई बार जिक्र किया था कि उनके गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ब्रह्मलीन इस पंथ से संबंध रखते थे। नाथ योगियों को गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई।

18 सितम्बर को हरियाणा के रोहतक जिले के 4 विद्यालयों में कार्यक्रम किये।

19 सितम्बर को महेन्द्रगढ़ जिले की नारनौल तहसील में 5 विद्यालयों में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

20 को नांगल चौधरी तहसील के 2 विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित किये।

इस प्रकार इस टीम के साधक श्री सांगाराम चौधरी ने बताया कि दिनांक 6 से 20 सितम्बर तक कुल 50 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

-जोधपुर मुख्यालय की एक और टीम (श्री रामदयाल चौधरी व अन्य) द्वारा काजरी जोधपुर में आयोजित 13-15 सितम्बर तक किसान मेले में आए पाँच हजार से अधिक किसानों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी तथा कई किसानों को ध्यान भी कराया गया।

23 सितम्बर को घण्टाघर जोधपुर में भी आए हुए विदेशी पर्यटकों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई।

-सीकरः-एक अन्य टीम द्वारा राजस्थान के सीकर जिले के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया। डॉ. अशोक चौधरी के अनुसार दिनांक 3-11 सितम्बर तक सीकर जिले के 25 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया। सद्गुरुदेव सियाग के संजीवनी मंत्र और उनके चित्र से हजारों विद्यार्थियों व शिक्षकों को अद्भुत सिद्धयोग से रूबरू कराया गया।

डॉ. चौधरी ने बताया कि एक विद्यालय में एक छात्रा को गहरी समाधि लग गई जो करीब एक घण्टे से भी ज्यादा समय तक रही। इसके बाद वापस सामान्य स्थिति में आई। लोग ध्यान के लिए बहुत क्रियाएँ करते हैं, घण्टों बैठकर ध्यान का अभ्यास करते हैं और दूसरी तरफ सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग में भारी शोरगुल में भी गहन समाधि लग जाती है। यह बड़ा ही अद्भुत सिद्धयोग है जो धरती पर उतर आया है-**मानवता के कल्याण के लिए।**

-सांचौर, रानीवाड़ा व चितलवाना तहसील (जालोर) व गुजरात के बनासकांठा जिले की थराद, लाखाणी व धानेरा तहसीलों में सिद्धयोग शिविरः-

समदड़ी व सांचौर के साधकों की एक अन्य टीम द्वारा दिनांक 5 से 26 सितम्बर तक सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर हजारों विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन से रूबरू कराया गया। जालोर जिले की सांचौर, चितलवाना व रानीवाड़ा तहसीलों के 46 विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किये गये।

उसके बाद गुजरात के सीमावर्ती जिले बनासकांठा व उनकी तीन तहसीलों में 47 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जालोर-गुजरात टीम के साधक श्री गणपत देवासी व श्री लुम्बेश ने बताया कि इन 20-21 दिनों में 93 कार्यक्रम आयोजित हुए हैं और अभी आगे के कार्यक्रम जारी हैं।

अहमदाबादः- दिनांक 28 अगस्त से 10 सितम्बर तक 20 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। साधक श्री मोहनसिंह गौड़ के अनुसार मेडिकल कॉलेजों, विद्यालयों, कॉलेजों, अस्पतालों, आई ए एस सेन्टर व अन्य संस्थानों में सिद्धयोग शिविर आयोजित किये गए।

मुम्बईः- अश्विनी अस्पताल मुम्बई के साधकों की टीम द्वारा नियमित सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर सैंकड़ों मरीजों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया तथा वहाँ पर नियमित रूप से सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित किये जाते हैं।

बाड़मेरः-जिले के बाटाडू, सिंगोडिया, सरली, सांजटा, भीमडा व खारंटिया आदि गाँवों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया।

देश-विदेश में सद्गुरुदेव का मिशन अनवरत रूप से चल रहा है।

गुरुदेव को बारंबार प्रणाम। उनकी दया से उनका मिशन निरंतर चलता रहे यही प्रार्थना है।

❖❖❖

www.the-comforter.org

"मंत्र जप और ध्यान से अद्भुत परिवर्तन"

दुर्घटना ग्रस्त शरीर में तेज झटकों का बंद होना और जल्दी स्वास्थ्य लाभ होना

दिनांक 3 अगस्त 2018, शाम 6:00 बजे, ग्राम-बांठड़ी, जिला-नागौर बस स्टेशन पर मेरा एक्सीडेंट हो गया था। मैं मोटरसाइकिल चला रहा था साइड से तेज गति से आ रही कार ने मुझे टक्कर मार दी। जिससे मेरा एक हाथ और पाँच पसलियाँ टूट गई, पूरा शरीर जख्मी हो गया। इलाज हेतु जयपुर के बड़े अस्पताल में ले जाया गया। वहाँ लगभग 12 दिन गंभीर इलाज चला।

घटना के समय से ही बाएं हाथ की नसों में खिंचाव हुआ और लगातार तेज-तेज झटके लग रहे थे। डॉक्टरों के इलाज के बावजूद यह झटका बंद नहीं हुआ।

फिर 15 दिन बाद हमारे जोधपुर के संबंधी आर.डी. देवल जी ने पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का एक मंत्र जो कि फोन नंबर-07533006009 से प्राप्त होता है, का नियमित जाप करने की सलाह दी।

मैंने इस मंत्र का मन ही मन सघन जप और नियमित ध्यान किया, इससे मुझे जल्दी स्वास्थ्य लाभ हुआ और मैं वापस पूर्ण स्वस्थ हो गया। जिस समस्या से-मैं जूझ रहा था, दवाईयाँ कारगर नहीं हो रही थी, वह गुरु मंत्र से हो गया।

गुरुदेव के एक प्रवचन में सुना था कि "बाहर का डॉक्टर प्लस अन्दर का डॉक्टर मिला दो तो रोग जल्दी ठीक होगा और हो रहा है।" मेरा इलाज इसी सिद्धांत पर हुआ। गुरुदेव ने कभी भी विज्ञान का विरोध नहीं किया। बल्कि विज्ञान से आगे के ज्ञान की बात दुनिया को बताई और क्रियात्मक ढंग से मूर्तरूप देकर बताई। मेरी सलाह है कि किसी भी इंसान को किसी भी प्रकार का कष्ट हो तो गुरु-मंत्र का सघन जाप करें और अपने कष्टों से छुटकारा पाएं। जय गुरुदेव !

-रामदेव राम रोहलंन
(व्याखयाता)
उम्र-53 वर्ष
गांव-कैराप,
तहसील-डीडवाना,
जिला- नागौर (राज.)

www.the-comforter.org

ध्यान योग केन्द्र, गंगापुरसिटी

:-स्थल:-

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, शाखा-गंगापुरसिटी

दूध डेयरी के पास, ताजपुर रोड़, राधा विहार कॉलोनी,
चकछाबा, गंगापुरसिटी जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

संपर्क-8209104535

सामूहिक ध्यान कार्यक्रम

प्रत्येक गुरुवार-सायं-6 से 8 बजे तक

अफीम से पूर्ण मुक्ति

मीराबाई पर जहर का असर न होना–एक प्रमाणित सत्य

– जोधपुर में पिछले 3–4 वर्षों से गुरुदेव के समय–समय पर शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। दिसम्बर 1992 में मेरे एक साथी के विशेष आग्रह पर एवं गुरुदेव द्वारा दीक्षा लेने से सभी नशों से छुटकारा हो जाता है यह जानकर मैं शिविर में गया, चूंकि मैं करीब 15–16 वर्षों से अफीम का सेवन कर रहा था और हालत ये थी कि अफीम मेरी सेहत का सेवन करने लगी थी। घर में अशांति का माहौल बना हुआ था। मुझे लगा कि शायद मेरी समस्या का वहाँ समाधान हो जाए।

–मैं प्रतिदिन करीब चार या पाँच ग्राम रोजाना अफीम का सेवन करता था। कभी–कभी इससे भी अधिक हो जाता था।

–मैंने दीक्षा दिसम्बर 1992 में ही ली थी। परन्तु गुरुदेव में सहज ही विश्वास व श्रद्धा न बना पाया अतः लगभग एक–आध वर्ष तक मुझे ध्यान में कुछ विशेष अनुभव न होता था परन्तु ध्यान लगता था। लोगों में त्वरित गति से आने वाला बदलाव मुझे ध्यान नियमित लगाने के लिए सदैव प्रेरित करता रहता था। मैंने यह निश्चय कर लिया कि यदि वास्तव में सच्चाई है तो मुझे भी देर सवेर इस नशे से अवश्य निजात मिलेगी। सितम्बर 1994 से मुझे ध्यान के दौरान यौगिक क्रियाएं होना शुरु हुई। स्वतः ही सारे ही शरीर की नशों का खिंचाव होना, गर्दन का गोल घूमना, स्वांस का ऊपर खींच जाना, पेट नाभि से लगना आदि। मेरी खुशी का ठिकाना न था। ध्यान के दौरान अब मुझे नशा (खुमारी) आने लगा। इस खुमारी के कारण मैं जो अफीम की डोज लेता था उसका असर कम होने लगा परन्तु मन में भय था कि यदि अफीम लेना बन्द कर दिया तो मर जाऊँगा। मेरा शरीर भी दुबला पतला ही था।

–मेरी स्थिति के बारे में, मैंने गुरुदेव से जिक्र किया तो उन्होंने कहा–भँवर तुम्हे इस लत को नहीं छोड़ना है यह अफीम ही एक दिन तुझे छोड़ जाएगा। तू हमेशा की तरह लेता रह।

–इधर मुझे नशा न आता था। अतः मैंने अफीम की मात्रा दो–तीन गुणा बढ़ा दी यहाँ तक कि एक दिन 25 ग्राम अफीम ले ली परन्तु आश्चर्य यह था कि शरीर में असर ही नहीं, हाँ, ध्यान जरूर नियमित रूप से चालू था। दो–तीन दिन 25 ग्राम ली होगी। फिर मुझे उल्टी होने लगी, जी मचलाने लगा तब घृणा वश 2 नवम्बर 1994 को छोड़ी। आज लगभग 6–7 माह गुजर चुके हैं जब कि मैं पूर्णरूप से स्वस्थ हूँ और बिना नशे के, बैचेनी के कोई लक्षण नहीं हैं। अब अफीम के नशे की जगह संजीवनी मंत्र जप का नशा, हर समय चढ़ा रहता है।

–शक्तिपात दीक्षा के उपरान्त आने वाला यह बदलाव विज्ञान के लिए खुली चुनौती है कि अफीम की डोज आदमी को दी जाए और उसे नशा नहीं आए। सबसे महत्वपूर्ण तो मुझे लगता है कि प्रकृति ने मुझे माध्यम बनाकर यह प्रमाणित कर दिया हैं कि हमारे राजस्थान में कृष्ण भक्त 'मीरा' ने जो कृष्ण के नाम पर 'जहर का प्याला' पिया था और उस पर उसका कोई असर नहीं हुआ। 25 ग्राम एक दिन में अफीम सेवन जहर नहीं तो और क्या है ?

कलियुग में वापस श्री कृष्ण ही गुरुदेव के रूप में प्रकट होकर मानवता को सत्पथ पर ले जा रहे हैं।

–भंवरलाल चौधरी
नागौर

संदर्भ–
सवितादेव संदेश जुलाई–1995 से

सद्‌गुरुदेव सियाग की तस्वीर से ध्यान

"मुझे दोनों सिद्धियाँ हो गई, पहले गायत्री (निर्गुण) की, फिर 1984 में कृष्ण की। श्री अरविन्द ने कहा है कि अगर दोनों सिद्धियाँ, एक ही व्यक्ति में, एक ही जन्म में हो जाए तो वो अमर हो जाएगा मतलब **"पार्थिव अमरत्व"** (Terrestrial Immortality) इस दुनिया में रहते हुए अमर हो जाएगा। इसलिए मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है।"

–समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

भैंगापन का ठीक होना

मेरे कमर में दर्द करीब 15 वर्ष से (एक्सीडेंट की वजह से) इतना जोरदार था कि एक बार झुक जाता तो कमर सीधी होने में पाँच मिनट लग जाते थे तो मैंने यही सोचा कि दीक्षा लेकर ये भी आजमा लेवें। जनवरी या फरवरी 1993 में गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का पाली में एक दिन का गुरुवार को कार्यक्रम हुआ था।

मुझे मालूम होते ही मैंने जाकर शक्तिपात दीक्षा ले ली। श्री गुरुजी ने नाम जप करने के लिए एक शब्द दिया और कहा कि आपको सिर्फ नाम जप और सुबह-शाम 15-15 मिनट, खाली पेट ध्यान करना है। बाकी सब शक्ति अपने आप करवाएगी।

मैं नाम जप करता रहा, कुछ दिन तक तो कोई परिणाम नहीं मिला तो हताश होने लगा तो मेरे स्थानीय गुरुभाईयों ने कहा तुम हताश मत होओ। नाम जप किये जाओ मैंने वैसा ही किया तो 10 जुलाई 1994 से ध्यान में मुझे स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई उसके बाद, अब मैं नियमित ध्यान करता हूँ और मेरा कमर दर्द एक दम ठीक हो गया है।

और मेरी दाहिनी आँखा एकदम तिरछी थी (भैंगापन) वो भी स्वतः ही बराबर हो गयी है। इसलिए मेरा तो यही कहना है कि जगत् की बाहरी विद्याएँ प्राप्त करके मनुष्य संपूर्ण सुखी नहीं हो सकता।

कभी न कभी आध्यात्मिक विद्या की ओर जाना ही पड़ता है। और गुरुजनों का आश्रय लेना ही पड़ता है।

-भंवरसिंह राजपुरोहित
राजपुरोहित मिष्ठान भंडार, पाली
'राजकुल संदेश' से संदर्भित

www.the-comforter.org

हेरोइन से मुक्ति

सन् 1982 की बात है। मेरे दांत में दर्द रहता था। डॉक्टर से जाँच कराने पर बोले कि दांत निकालना पड़ेगा। दांत निकलवाते समय टूट गया और एक टुकड़ा अंदर रह गया। मुझे दर्द एवं उच्च रक्त चाप था। डॉक्टर को दिखाने पर उन्होंने दर्द निवारक इन्जेक्शन दिये। धीरे-धीरे इन्जेक्शन की मात्रा बढ़ती गई एवं मुझे फिर आदत पड़ गई।

मैं रोज 15-15 इंजेक्शन लेने लगा जो कि मुझसे छूटने मुश्किल हो गये। यदि कभी नहीं लेता तो बदन में असहनीय दर्द होने लगता था। इस प्रकार मैं धीरे-धीरे इन इन्जेक्शनों का का आदी हो गया।

फिर किसी के कहने से मैं हेरोइन के इंजेक्शन लेने लग गया। मेरे परिवार वालों को यह लगने लगा कि अब इसकी मौत शीघ्र निश्चित है।

मेरी बहन को गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के दर्शन की जानकारी थी। उसने कहीं से इनकी महिमा सुन रखी थी। वह मुझे गुरुदेव के श्री चरणों में ले आई।

परम पूज्य गुरुदेव से मैंने 1988 में दीक्षा ली। दीक्षा के बाद गुरुदेव द्वारा बताये मंत्र का सघन जप और नियमित सुबह-शाम खाली पेट 15-15 मिनट ध्यान करने लगा। इससे शीघ्र ही नशे के इंजेक्शन छूट गये। उच्च रक्तचाप भी ठीक हो गया। अब मैं पूर्णतया ठीक हूँ।

मेडिकल विज्ञान इस पर शायद विश्वास न करे लेकिन मैं उदाहरण के रूप में आप सबके समक्ष हूँ। अब मैं शारीरिक व मानसिक रूप से भी पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मेरा ऐसा मत है कि यह एक दिव्य एवं पूर्ण विज्ञान है। समस्त मानव जाति को इसकी आवश्यकता है।

-रणवीर सिंह सैनी
पुत्रश्री प्यारेलाल सैनी
गाँव-किराड़ा
हिसार (हरियाणा)
संदर्भ-सवितादेव संदेश
अखबार सन् 1995

नाम जप से अद्भुत परिवर्तन आता है और आज तक लाखों लोग संजीवनी मंत्र से लाभान्वित हो चुके हैं।

अवतार की संभावना और हेतु

जिस योग में कर्म और ज्ञान एक हो जाते हैं, कर्मयज्ञ योग और ज्ञानयोग एक हो जाते हैं, जिस योग में कर्म की परिपूर्णता ज्ञान में होती है और ज्ञान कर्म का पोषण करता, उसका रूप बदल देता और उसे आलोकित कर देता है और फिर ज्ञान और कर्म दोनों ही उन परम भगवान् पुरुषोत्तम को समर्पित किये जाते हैं।

जो हमारे अन्दर नारायण-रूप से सदा हमारे हृदयों में गुप्त भाव से विराजमान हैं, जो मानव-आकार में भी अवताररूप से प्रकट होते हैं और दिव्य जन्म ग्रहण करके हमारी मानवता को अपने अधिकार में ले लेते हैं, उस योग का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण बातों-बातों में यह कह गये कि यही वह सनातन आदियोग है जो मैंने सूर्यदेव विवस्वान् को प्रदान किया और विवस्वान् ने जिसे मनुष्यों के जनक मनु को और मनु ने सूर्यवंश के आदिपुरुष इक्ष्वाकु को दिया और इस प्रकार यह योग एक राजर्षि से दूसरे राजर्षि को मिलता रहा और इसकी परंपरा चलती रही, फिर काल की गति में यह खो गया।

भगवान् श्री कृष्ण, अर्जुन से कहते हैं, आज वही योग मैं तुझे दे रहा हूँ, क्योंकि तू मेरा प्रेमी, भक्त सखा और साथी है। भगवान् ने इस योग को परम रहस्य कहकर इसे अन्य सब योगों से श्रेष्ठ बताया, क्योंकि अन्य योग या तो निर्गुण ब्रह्म को या सगुण साकार इष्टदेव को ही प्राप्त कराने वाले, या निष्कर्मज्ञानस्वरूप मोक्ष अथवा आनन्दनिमग्न मुक्ति के ही दिलाने वाले हैं, किन्तु यह योग परम रहस्य और संपूर्ण रहस्य को खोलकर दिखानेवाला, दिव्य शक्ति और दिव्य कर्म को प्राप्त कराने वाला तथा पूर्ण स्वतंत्रता से युक्त दिव्य ज्ञान, कर्म और परमानन्द को देनेवाला है।

जैसे भगवान् की परम सत्ता अपनी व्यक्त सत्ता की सब परस्पर-विभिन्न और विरोधी शक्तियों और तत्त्वों का समन्वय कर उन्हें अपने अन्दर एक कर लेती है वैसे ही इस योग में भी सब योगमार्ग मिलकर एक हो जाते हैं। इसलिए गीता का यह योग केवल कर्मयोग नहीं है जैसा कि कुछ लोगों का आग्रह है और जो इसे तीन मार्गों में से सबसे कनिष्ठ मार्ग बतलाते हैं, बल्कि यह परम योग है, पूर्ण समन्वयात्मक और अखंड है, जिसमें जीव के अंग-प्रत्यंगों की सारी शक्तियाँ भगवन्मुखी की जाती हैं।

इस योग को विवस्वान् आदि को दिये जाने की बात को अर्जुन ने अत्यंत स्थूल अर्थ में ग्रहण किया (इस बात को दूसरे अर्थ में भी लिया जा सकता है) और पूछा कि सूर्यदेव जो जीव-सृष्टि में अग्रजन्माओं में से एक हैं, जो सूर्यवंश के आदिपुरुष हैं उन्होंने मनुष्यरूप श्रीकृष्ण से, जो अभी-अभी जगत् में उत्पन्न हुए, यह योग कैसे ग्रहण किया। इस प्रश्न का उत्तर श्रीकृष्ण यह दे सकते थे कि सम्पूर्ण ज्ञान के मूलस्वरूप जो भगवान् हैं उस भगवद्रूप से मैंने यह उपदेश उन सवितादेव को किया था जो भगवान् के ही ज्ञान के व्यक्त रूप हैं और जो समस्त अंतर्बाह्य दोनों ही प्रकाशों के देनेवाले हैं--"भर्गो सवितुर्देवस्य यो नो धियः प्रचोदयात्।" परन्तु यह उत्तर उन्होंने नहीं दिया। उन्होंने इस प्रश्न के प्रसंग से अपने छिपे हुए ईश्वररूप की वह बात कही जिसकी भूमिका वे तभी बांध चुके थे, जब उन्होंने कर्म करते हुए भी कर्मों से न बंधने के प्रसंग में अपना दिव्य दृष्टांत सामने रखा था।

-महर्षि श्री अरविन्द

संदर्भ-गीता प्रबन्ध पृष्ठ-152

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

मनुष्य और विकास

-श्री अरविन्द

सभी नमूने हैं। और नमूनों में यह भिन्नता और साथ ही सबका एक-सा आरंभिक आधार इस बात का चिह्न है कि कोई **सचेतन शक्ति** अपने भाव के साथ खेल रही है और उसके द्वारा सृष्टि की सब तरह की संभावनाएँ विकसित कर रही हैं।

पशु-जाति जन्म लेते समय एक समान प्रारंभिक भ्रूणीय या आधारभूत नमूने से शुरू कर सकती है, वह कुछ दूर तक विकास की कुछ **समरूपताओं** का या उसकी कुछ रेखाओं या सभी रेखाओं का अनुसरण कर सकती है। ऐसी जातियाँ भी हो सकती हैं, जो दोहरे स्वभाव की हों, उभयचर हों, दो प्ररूपों के बीच की हों।

लेकिन यह जरूरी नहीं है कि इन सबका यह अर्थ हो कि उन प्रारूपों का विकास किसी विकासधारा में, एक में से दूसरे में हुआ है। नयी विशिष्टताओं को प्रकट करने के लिये **वंशानुक्रम** विभिन्नता से अलग शक्तियाँ सक्रिय रही हैं। भौतिक शक्तियाँ हैं, जैसे भोजन, प्रकाश-रश्मियाँ तथा कुछ और जिनके बारे में हम अभी जानना शुरू कर रहे हैं, निश्चय ही कुछ और भी हैं, जिनके बारे में हम अभी तक कुछ नहीं जानते; दुर्ज्ञेय **अतीन्द्रिय** शक्तियाँ और अदृश्य जीवन-शक्तियाँ भी कार्यरत हैं।

क्योंकि भौतिक विकासात्मक परिकल्पना में भी **प्राकृतिक चयन** का लेखा-जोखा समझने के लिये इन सूक्ष्मतर शक्तियों को स्वीकार करना पड़ता है। अगर कुछ प्रारूपों में गुह्य अथवा अवचेतन ऊर्जा वातावरण की आवश्यकताओं को पूरा करती है तो दूसरों में वह उदासीन और जीने में भी अक्षम रहती है। यह स्पष्ट रूप से भिन्न प्राण-ऊर्जा और मनस्तत्त्व का चिह्न है, एक ऐसी चेतना और शक्ति का चिह्न है जो भौतिक चेतना और शक्ति से भिन्न है और प्रकृति में भिन्नता लाने के लिये कार्यरत है।

क्रिया की पद्धति की समस्या अब भी अस्पष्ट और अज्ञात तत्त्वों से भरी है और अभी किसी निश्चित परिकल्पना का बनाना संभव नहीं है।

जड़तत्त्व के अंदर अभिव्यक्ति में बने प्ररूपों में से एक प्ररूप, बहुत सारे नमूनों में से एक नमूना है मनुष्य। जो कुछ सृष्ट हुआ है उसमें वह सबसे अधिक जटिल और चेतना के अंश में सबसे अधिक समृद्ध और अपने निर्माण की **विलक्षण प्रवीणता** में सबसे अधिक समृद्ध हैं वह **पार्थिव सृष्टि** का शीर्ष है पर उसका अतिक्रमण नहीं करता। औरों की तरह उसके भी अपने सहज विधान हैं, सीमाएँ, विशेष प्रकार का जीवन, स्वभाव और **स्वधर्म** हैं। उन सीमाओं के भीतर वह बढ़ सकता और विकसित हो सकता है, लेकिन वह उनसे बाहर नहीं जा सकता।

अगर कोई ऐसी पूर्णता है जिस तक उसे पहुँचना है तो वह स्वयं इसकी अपनी जाति में, अपनी सत्ता के नियम के भीतर होनी चाहिये - उसकी पूर्ण क्रीड़ा होगी लेकिन होगी उसकी रीति और युक्ति को मान्य रखकर उनका अतिक्रमण करके नहीं। अपना अतिक्रमण करना, अतिमानव में वर्धित होना, देव के स्वभाव और क्षमताओं को धारण करना उसके स्वधर्म के विरूद्ध होगा, अव्यावहारिक और असंभव होगा।

सत्ता के हर रूप और तरीके का, सत्ता के आनन्द का अपना ही मार्ग होता है। मन के द्वारा अपने परिवेश पर प्रभुत्व पाना, उसका उपयोग और उपभोग करना, जिसकी उसमें क्षमता है, उचित रूप में मन और मनोमय सत्ता का उद्देश्य हैं लेकिन इसके परे देखना, जीवन के किसी दूरवर्ती उद्देश्य या लक्ष्य के पीछे दौड़ना, मानसिक आकृति से आगे बढ़ने की **अभीप्सा** करना जीवन में उद्देश्यात्मक तत्त्व को लाना है जो वैश्व निर्माण में दिखायी नहीं देता।

अगर किसी **अतिमानसिक सत्ता** को **पार्थिव सृष्टि** में उतरना है तो उसे एक नयी और स्वतंत्र अभिव्यक्ति होना चाहिये। जैसे प्राण और मन जड़ में अभिव्यक्त हुए हैं उसी तरह अतिमानस को वहाँ प्रकट होना चाहिये और गुप्त चित्-शक्ति को अपनी **अंतःशक्ति** की इस नयी श्रेणी के लिये आवश्यक प्रतिमान तैयार करने होंगे। लेकिन प्रकृति की क्रिया में ऐसे किसी भी अभिप्राय को कोई चिह्न दिखायी नहीं देता।

संदर्भ-दिव्य जीवन
पृष्ठ-812 से

क्रमशः अगले अंक में...

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

''अत्यधिक सात्विक प्रकृति के लोग, विशेषकर यदि वे शक्ति के प्रति प्रबल रूप से समर्पित हों तो, मन और प्राण में विरोधी आसुरी शक्तियों के घेरे या आक्रमणों से बच जाते हैं।''

ऐसे कोई भी साधक नहीं हैं जिन पर गलत शक्तियों ने कभी भी आक्रमण न किये हों-परन्तु यदि व्यक्ति में पूर्ण श्रद्धा और आत्म-निवेदन का भाव हो तो वह बहुत अधिक कठिनाई के बिना ही आक्रमण को दूर हटा सकता है।

यदि सत्ता के सभी भागों में श्रद्धा और समर्पण पूर्ण रूप से हों तो आक्रमण नहीं हो सकता। यदि प्रबल केन्द्रीय श्रद्धा और समर्पण हर समय विद्यमान हों, तब भी आक्रमण हो सकते हैं किन्तु उन्हें सफल होने का मौका नहीं मिलता।

दो चीजें हैं जो मन या प्राण पर उन (विरोधी शक्तियों) के किसी आक्रमण की अस्थायी सफलता को भी असम्भव बना देती हैं-पहली है पूर्ण प्रेम, भक्ति और ऐसा विश्वास जिसे कोई चीज विचलित नहीं कर सकती दूसरी, मन तथा प्राण में एक ऐसी स्थिरता एवं समता जो आन्तरिक प्रकृति का मूल स्वभाव बन गया हो। सुझाव उसके बाद भी आ सकते हैं, बाहरी तौर पर स्थिति फिर भी खराब हो सकती है, किन्तु सत्ता अभेद्य बनी रहती है। इनमें से कोई एक चीज भी अपने-आप में पर्याप्त है-और जैसे-जैसे ये बढ़ती हैं उसी अनुपात में विरोधी शक्तियों का अस्तित्व भी कम होता जाता है और उत्तरोत्तर

एक ऐसा व्यापार बन जाता है जो हमारे आन्तरिक जीवन का अंग नहीं होता,-यद्यपि बाह्य वातावरण में वे तब भी रह सकती हैं।

अत्यधिक सात्विक प्रकृति के लोग, विशेषकर यदि वे शक्ति के प्रति प्रबल रूप से समर्पित हों तो, मन और प्राण में विरोधी आसुरी शक्तियों के घेरे या आक्रमणों से बच जाते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे मानव की निम्र, प्रकृति या साधना की कठिनाइयों से बच जाते हैं, परन्तु ये कठिनाइयाँ विरोधी शक्तियों द्वारा इन्हें मिलने वाली प्रभावशाली सहायता से जटिल नहीं बन जातीं।

यह बात नहीं कि उनमें कोई ऐसा स्थल नहीं होता जिसे **विरोधी शक्तियाँ** दबा न सकें किन्तु वास्तविक तथ्य यह है कि वे इन स्थलों तक पहुँच ही नहीं सकतीं, क्योंकि प्रकृति की रचना ही ऐसी है जो सात्विक प्रकृति द्वारा लाये गये प्रकाश और सुख (देखो गीता) के कारण उनके आक्रमण से सुरक्षित होती है। परन्तु वैसे सत्ता में एक ऐसी आन्तरिक स्पष्टता, संतुलन एवं एक सुखद रचना होती है जो सूर्य के प्रकाश को आसानी से प्रतिबिम्बित करती है, बादल और तूफान के प्रभाव के अधीन कम होती है जो विरोधी शक्तियों को कोई अवसर प्रदान नहीं करती।

प्रकृति उग्र रूप में उत्तेजित या विचलित या उद्विग्न होने से इनकार करती है। अधिक-से-अधिक, शरीर पर ही विरोधी शक्तियाँ आक्रमण करती हैं और वहाँ भी इसलिये कि स्नायवीय सत्ता शान्त होती है, और यह आक्रमण केवल **स्थूलतम सत्ता** के माध्यम से ही किया जा सकता है।

प्राणिक पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु इसे आक्रमण से मुक्त रखना तब तक सरल नहीं है जब तक ठोस **आध्यात्मिक पवित्रता** के साथ विशालता और उस विशालता में उतरती हुई शान्ति स्थिर न हो जाय। निःसन्देह यह विशालता अपने-आप में पर्याप्त नहीं है।

वे (विरोधी शक्तियाँ) इसलिये आती हैं कि उन्हें भूतकाल में मुक्त रूप से

आने दिया गया था-इसलिये वे अपने कार्य को फिर से आरम्भ करना और जारी रखना चाहती हैं। उनका सामना करने का उपाय है पूर्ण परित्याग और भगवान् की ओर पूर्णतया उन्मुख होना।

अशुभ शक्तियाँ सदा ही अचेतनता के या अर्धचेतनता के क्षणों में अथवा अवचेतन या बाह्य भौतिक चेतना द्वारा तब तक आक्रमण कर सकती हैं-जब तक सब कुछ अतिमानसिक रूप में रूपान्तरित नहीं हो जाता। यदि शक्ति विद्यमान हो तो उन शक्तियों को तुरन्त ही पीछे ठेल दिया जा सकता है।

संदर्भ-अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

अहंकार

''स्वभाव या प्रकृति कार्य करते हैं। भगवान् किसी को कुछ करने के लिये बाधित नहीं करते। भागवत उपस्थिति और सहायता के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

स्वभाव या प्रकृति दिव्य शक्ति है और यही चीजों को कार्यान्वित करती है, लेकिन वह हर व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार, हर व्यक्ति की उस इच्छा शक्ति के अनुसार या उसके द्वारा कार्य करती है जो अज्ञान से भरी होती है-और यह तब तक चलता रहता है जब तक मनुष्य भगवान् की ओर न मुड़े और उनके बारे में सचेतन होकर उनके साथ एक न हो जायें।

उसके बाद ही कहा जा सकता है कि व्यक्ति के अंदर सब कुछ भगवान् की प्रत्यक्ष इच्छा के द्वारा होना शुरू होता है।

संदर्भ- 'अंहकार' पुस्तक के पृष्ठ-70 पर श्री अरविन्द

''यह आध्यात्मिक अहंकार सामान्य अहंकार की अपेक्षा बहुत अधिक भयंकर होता है। क्योंकि इसमें आदमी को यह पता नहीं होता कि यह अहंकार है।

बाहरी तौर पर जब तुम अहंकार से भरे होते हो तो इतना ही नहीं कि तुम उसे जानते हो बल्कि और लोग तुम्हें उसका और अधिक भान करा देते हैं और परिस्थितियाँ क्षण-क्षण पर तुम्हें उसका प्रमाण देती रहती है।

परंतु आध्यात्मिक अहंकार में दुर्भाग्यवश तुम्हें ऐसे लोग मिलते है जो तुम्हारा बहुत अधिक मान करते हैं, तुम्हें पता भी नहीं लगता कि तुम बहुत ज्यादा अहंकार से भरे हो।

संदर्भ- 'अंहकार' पुस्तक के पृष्ठ-15 पर श्री अरविन्द

www.the-comforter.org

विशेष सूचना

समस्त साधक गणों से निवेदन है कि समर्थ सद्‌गुरुदेव की आराधना करने पर आपके जीवन में जो बदलाव आया है, रोगों व नशों से मुक्त हुए हैं, आध्यात्मिक विकास हुआ है, या सिद्धयोग दर्शन से संबंधित कोई लेख हो तो अपना पूर्ण पता, संपर्क सूत्र व अपनी फोटो सहित अनुभूतियाँ एवं बीमारियों से संबंधी लेख भेजें, जिसे स्पिरिचुअल-साइंस मासिक पत्रिका में प्रकाशित किया जा सकें।

यदि आप ''स्पिरिचुअल साइंस'' मासिक पत्रिका के वार्षिक, द्विवार्षिक या आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो आप 300/- वार्षिक, 600/- द्विवार्षिक या 3000/- आजीवन (11 वर्ष) शुल्क राशि, संस्था के बैंक खाते में या डी डी द्वारा भेज सकते हैं।

बैंक खाते का विवरण

A/c Name- Adhyatma Vigyan Satsang Kendra, Jodhpur
Bank- State Bank of Indai (SBI)
A/c No. 34033768041
Branch- Chopasani Housing Board (CHB) Jodhpur
IFS Code- SBIN0012846

-सम्पादक

तत्त्व ज्ञान प्राप्ति के लिए

पूर्ण समर्पण

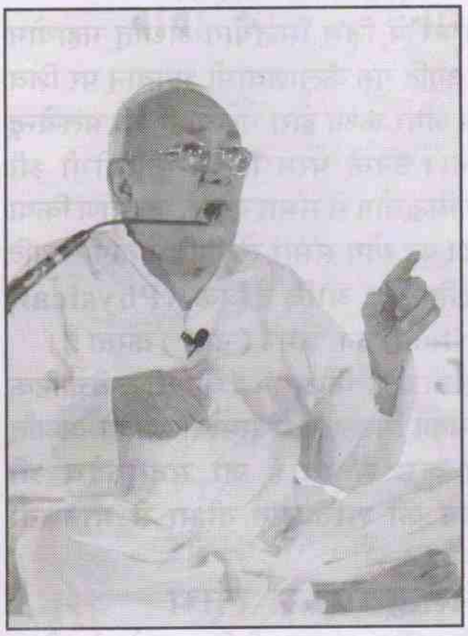

मंत्र जप से परिवर्तन आ रहा है। इसको जपना है Round the clock (हर समय) अब कैसे छूटे नाम रट लागि। तो आप चाहे किसी बीमारी से ग्रसित हो, इससे ठीक हो जाओगे, यदि आप परिवर्तन चाहते हो तो मुझे ही गुरु बनाना पड़ेगा, झुककर के Demand (माँग) करनी पड़ेगी।

मैं आपको राजा जनक का उदाहरण दूँ-राजा जनक को तत्त्वज्ञान प्राप्त करने की सनक सँवार हुई। उन्होंने बहुत से गुरुओं को बुलवा लिया लेकिन उनसे पार नहीं पड़ी। फिर उधर से अष्टावक्र जी आ गये, अष्टावक्र जी को देखकर, दूसरे गुरु हँस दिये। (उनके शरीर में आठ प्रकार के बल थे, शरीर में कूब थी।)

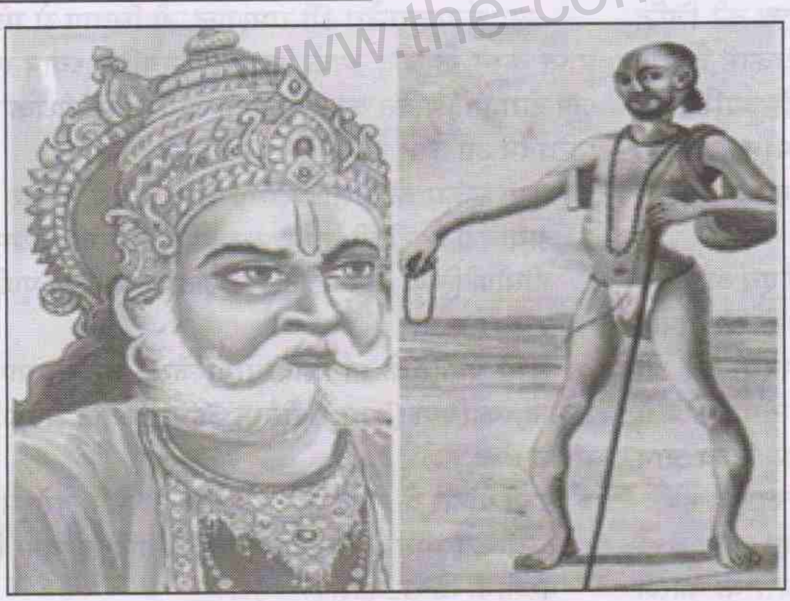

जब जनक ने पूछा महाराज यह समस्या है तो उसने कहा, राजा यह तो कोई समस्या नहीं है। तू राजा है, जनक है, यदि यह अहंकार है, मन में तो यह ज्ञान नहीं मिलेगा। तुझे झुक कर ही माँगना पड़ेगा।

फिर उन्होंने जवाब दिया कि ये तो खाल के व्यापारी है राजन। इनको इसका ज्ञान ही नहीं है तो कहते हैं, अष्टावक्र जी ने जनक से कहा-घोड़े की एक रकाब में पैर रख, दूसरे में नहीं रख सकेगा, बशर्त है तू झुककर माँग ले। उदाहरण यह है कि राजा जनक ने घोड़े की एक रकाब में पैर रखा, दूसरे में नहीं रख सके और समाधि लग गई और तीन दिन तक खड़े रहे। मतलब आपको इस ज्ञान प्राप्ति में टाइम (समय) नहीं लगेगा। यह ऐसा दिव्य ज्ञान है जो इस भारत की पुण्य भूमि में ही हमेशा हुआ है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-जोधपुर आश्रम में विशाल शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम 30 जुलाई 2009

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

❖❖❖

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

"21वीं सदी का भारत"

भारत सहित सम्पूर्ण विश्व के भविष्यद्रष्टा संतों ने एक ही स्वर में भविष्यवाणियाँ कर रखी है कि 20वीं सदी के आखिरी दशक में जो विश्व-व्यापी धार्मिक-क्रान्ति होगी उसका नेतृत्व एक भारतीय वेदान्ती करेगा।

इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द की भविष्य-वाणी सबसे महत्वपूर्ण है। महर्षि के अनुसार भविष्य में सम्पूर्ण मानव-जाति में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा, उसका कारण हिन्दू-दर्शन में वर्णित दशवें अवतार का अवतरण होगा। हिन्दू-दर्शन के सिद्धान्त के अनुसार हर अवतार सृष्टि में एक नई चेतना पैदा करता है।

श्री अरविन्द के ही शब्दों में — "यदि क्रम-विकास के साथ अवतारवाद का कोई सम्बन्ध न हो तो अवतारवाद का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। हिन्दू दशावतारों की श्रृंखला अपने आप में क्रम-विकास का रूपक है।

(1) सर्वप्रथम "मत्स्यावतार" हुआ, जिसके माध्यम से जल में जीवों का सृष्टि-विकास हुआ

(2) फिर पृथ्वी व जल के स्थल-जलचर "कच्छप" का अवतरण हुआ।

(3) तीसरे अवतार "वाराह" के साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई।

(4) "नरसिंह" अवतार पशुओं व मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है।

फिर "मनु", "वामन", "परशुराम", "राम", "कृष्ण" आदि अवतरित हुए, जो निरन्तर प्राणमय-राजसिक से सात्विक-मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने। इस प्रकार श्रीकृष्ण नवें अवतार थे।

हिन्दू दर्शन के अनुसार दशवें अवतार के अवतरण के साथ ही सम्पूर्ण मानवजाति क्रम विकास के सिद्धान्त के अनुसार धीरे-धीरे अपने असली स्वरूप अर्थात् दिव्य-रूप

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

में रूपान्तरित हो जायेगी। मानवता में दशवें अवतार के अवतरण के कारण जो रूपान्तरण होगा, उसे देखकर ही महर्षि श्रीअरविन्द ने भविष्य की है कि-" आगामी मानव-जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।"

वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार मानवता में यह रूपान्तरण ऋग्वेद में वर्णित सातों कोशों — (1) अन्न (Matter) (2) प्राण (Life) (3) मन (mind) (4) विज्ञान (Supermind or Gnosis) (5) आनन्द (Bliss) (6) चित (Becoming) (7) सत (Being) के चेतन होने से होगा।

वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य शरीर की संरचना उपरोक्त सात तत्वों से हुई है, जिनके कोशों में आत्मा अन्तर्निहित है। मानवता में अब तक प्रथम चार कोश अच्छी प्रकार चेतन हो चुके हैं। जब सात में से चार चेतन हो सकते हैं तो बाकी तीनों (सत+चित+आनन्द = सच्चिदानन्द) के चेतन होने का भी कोई न कोई तरीका अवश्य है। अन्तिम तीनों कोशों को चेतन करने की विधि केवल वेदान्ती ही जानते हैं। क्योंकि वैदिक-धर्म अर्थात हिन्दू-धर्म ईश्वरवाद का जनक है। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है, मानवता में जितना विकास पश्चिम कर सकता था कर चुका है। अब आगे मानव-जाति को जिस विकास की आवश्यकता है, उसे संसार का कोई धर्म और राष्ट्र नहीं कर सकता। इस ज्ञान का दान तो सम्पूर्ण मानव-जाति को अनादिकाल से भारत ही करता आया है, और अब भी भारत ही करेगा। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है — "भारत को ही स्वयं अपने पास से संसार का भावी-धर्म भेजना होगा, ऐसा सनातन धर्म, जो सभी धर्मों, विज्ञानों और दर्शनों में सामंजस्य करके सम्पूर्ण मानवजाति को एक-आत्मा बना देगा।"

"सृष्टि का इतिहास इसका साक्षी है कि पार्थिव जीवन-लीला को अधिक पूर्ण और आनन्दमयी बनाने में भारत को एक विशिष्ट कार्यभार, एक विलक्षण रोल दिया गया है जिसे दूसरा कोई भी राष्ट्र सम्पन्न नहीं कर सकता।"

कितनी ही लम्बी-चौड़ी बातें क्यों न करो, कितना भी प्रयत्न क्यों न करो, पर तुम ईश्वर को मनुष्य के सिवाय और कुछ सोच ही नहीं सकते।

तुम भले ही ईश्वर और संसार की सारी वस्तुओं पर विद्वत्तापूर्ण लम्बी-लम्बी वक्तृताएँ दे डालो, बड़े युक्तिवादी बन जाओ और अपने मन को समझा लो कि ईश्वरावतार की ये सब बातें अर्थ हीन और व्यर्थ हैं, पर क्षण भर के लिए सहज बुद्धि से विचार तो करो।

इस प्रकार की अद्‌भुत विचार-बुद्धि से क्या प्राप्त होता है? कुछ नहीं--शून्य, केवल कुछ शब्दों का ढेर! अब भविष्य में जब कभी तुम किसी मनुष्य को अवतार-पूजा के विरुद्ध बड़ा विद्वत्तापूर्ण भाषण देते हुए सुनो तो सीधे उसके पास चले जाना और पूछना कि उसकी ईश्वर सम्बन्धी अपनी धारण क्या है, **'सर्वशक्तिमान', 'सर्वव्यापी'** आदि शब्दों का उच्चारण करने से वह शब्द-ध्वनि के अतिरिक्त और क्या समझता है? --तो देखोगे, वास्तव में वह कुछ नहीं समझता। वह उनका ऐसा कोई अर्थ नहीं लगा सकता, जो उसकी अपनी मानवी प्रकृति से प्रभावित न हो।

इस बात में तो उसमें और रास्ता चलने वाले एक अनपढ़ गँवार में कोई अन्तर नहीं। फिर भी यह अनपढ़ व्यक्ति कहीं अच्छा हैं, क्योंकि कम से कम वह शान्त तो रहता है, वह संसार की शान्ति को तो भंग नहीं करता; पर यह लम्बी-लम्बी बातें करने वाला व्यक्ति मनुष्य-जाति में अशान्ति और दुःख पैदा कर देता हैं, धर्म का अर्थ है प्रत्यक्षानुभूति। अतएव इस अपरोक्ष अनुभूति और थोथी बात के बीच जो विशेष भेद है, उसे हमें अच्छी तरह पकड़ लेना चाहिए। आत्मा के गम्भीरतम प्रदेश में हम जो अनुभव करते हैं, वही प्रत्यक्षानुभूति हैं इस सम्बन्ध में सहज बुद्धि जितनी अ-सहज (दुर्लभ) है, उतनी और कोई वस्तु नहीं।

हम अपनी वर्तमान प्रकृति से सीमित हो, ईश्वर को केवल मनुष्य-रूप में ही देखा सकते हैं। मान लो, भैंसों की इच्छा भगवान् की उपासना करने की हो--तो वे अपने स्वभाव के अनुसार भगवान् को एक बड़े भैंसे के रूप में देखेंगे। यदि एक मछली भगवान् की उपासना करनी चाहे तो उसे भगवान् को एक बड़ी मछली के रूप में सोचना होगा। **इसी प्रकार मनुष्य भी भगवान् को मनुष्य-रूप में ही देखता हैं।** यह न सोचना कि ये सब विभिन्न धारणाएँ केवल विकृत कल्पनाओं से उत्पन्न हुई हैं।

मनुष्य, भैंसा, मछली-ये सब मानों भिन्न-भिन्न बर्तन हैं; ये सब बर्तन अपनी-अपनी आकृति और जल-धारण-शक्ति के अनुसार ईश्वर-रूपी समुद्र के पास अपने को भरने के लिए जाते हैं। पानी मनुष्य में, मनुष्य का रूप ले लेता हैं, भैंसे में भैंसे का और मछली में मछली का। प्रत्येक बर्तन में वही ईश्वर-रूपी समुद्र का जल हैं, जब मनुष्य ईश्वर को देखता हैं तो वह उसे मनुष्य-रूप में देखता हैं और यदि पशुओं में ईश्वर सम्बन्धी कोई ज्ञान हो तो वे उन्हें अपनी अपनी धारणा के अनुसार पशु के रूप में देखेंगे। अत: हम ईश्वर को मनुष्य-रूप के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में देख ही नहीं सकते और इसलिए हमे मनुष्य-रूप में ही उसकी उपासना करनी पड़ेगी। इसके सिवा अन्य कोई रास्ता ही नहीं है। इसीलिए पूज्य सद्‌गुरुदेव से बढ़कर कोई भगवान् नहीं हैं।

दो प्रकार के लोग ईश्वर की मनुष्य-रूप में उपासना नहीं करते। एक तो नर पशु, जिसे धर्म का कोई ज्ञान नहीं और दूसरे परमहंस, जो मानव जाति की सारी दुर्बलताओं के ऊपर उठ चुके हैं और जो अपनी मानवीय प्रकृति की सीमा के परे चले गये हैं उनके लिए सारी प्रकृति आत्मस्वरूप हो गयी हैं, वे ही ईश्वर को उसके वास्तविक स्वरूप में भज सकते हैं, अन्य विषयों के समान यहाँ भी दोनों चरम भाव एक से ही दिखते हैं। अतिशय अज्ञानी और परम ज्ञानी, दोनों ही उपासना नहीं करते। नरपशु अज्ञानवश उपासना नहीं करता, और जीवन्मुक्त अपनी आत्मा में परमात्मा का प्रत्यक्ष अनुभव कर लेने के कारण। इन दो चरम भावों के बीच में रहने वाला कोई मनुष्य यह आकर तुमसे कहे कि वह भगवान् को मनुष्य-रूप में भजने वाला नहीं है, तो उस पर रहम करना। उसे अधिक क्या कहें, वह बस, थोथी बकवास करने वाला है। उसका धर्म अविकसित और खोखली बुद्धिवालों के लिए है।

''ईश्वर मनुष्य की दुर्बलताओं को समझता है और मानवता के कल्याण के लिए नरदेह धारण करता हैं।''

श्री कृष्ण ने अवतार के सम्बन्ध में गीता में कहा हैं,

''जब-जब धर्म की ग्लानि होती है और अधर्म बढ़ता है, तब तब मैं अवतार लेता हूँ। साधुओं की रक्षा और दुष्टों के नाश के लिए तथा धर्म-संस्थापनार्थ मैं युग-युग में अवतीर्ण होता हूँ।'' **''मूर्ख लोग मुझ जगदीश्वर के यथार्थ स्वरूप को न जानने के कारण मुझ नर-देहधारी की अवहेलना करते हैं।''**

भगवान् श्री रामकृष्ण कहते थे, ''जब एक बहुत बड़ी लहर आती है तो छोटे-छोटे नाले और गड्ढे अपने आप ही लबालब भर जाते हैं, इसी प्रकार जब एक अवतार जन्म लेता है तो समस्त संसार में आध्यात्मिकता की एक बड़ी बाढ़ आ जाती है और लोग, वायु के कण-कण में धर्मभाव का अनुभव करने लगते हैं।''

–सम्पादक

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य
वॉल्युम-4, पेज. न.- 25

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

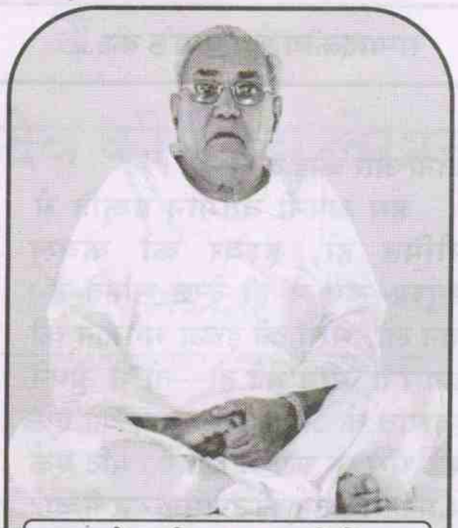

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणयाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें-07533006009

सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

काजरी जोधपुर के किसान मेले में सैकड़ों किसानों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (13 से 15 सितम्बर 2018)

अहमदाबाद (गुजरात) के विभिन्न विद्यालयों, कॉलेजों व अन्य संस्थानों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (सितम्बर 2018)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

जयपुर व भोपालगढ़ (जोधपुर) के विभिन्न विद्यालयों व कॉलेजों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (सितम्बर 2018)

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् ________________________________

____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी